आचार्य पूज्यपादादि की

सटीक-परिभाषायें

संकलन/संयोजन

मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

(संघस्थ मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी महाराज)

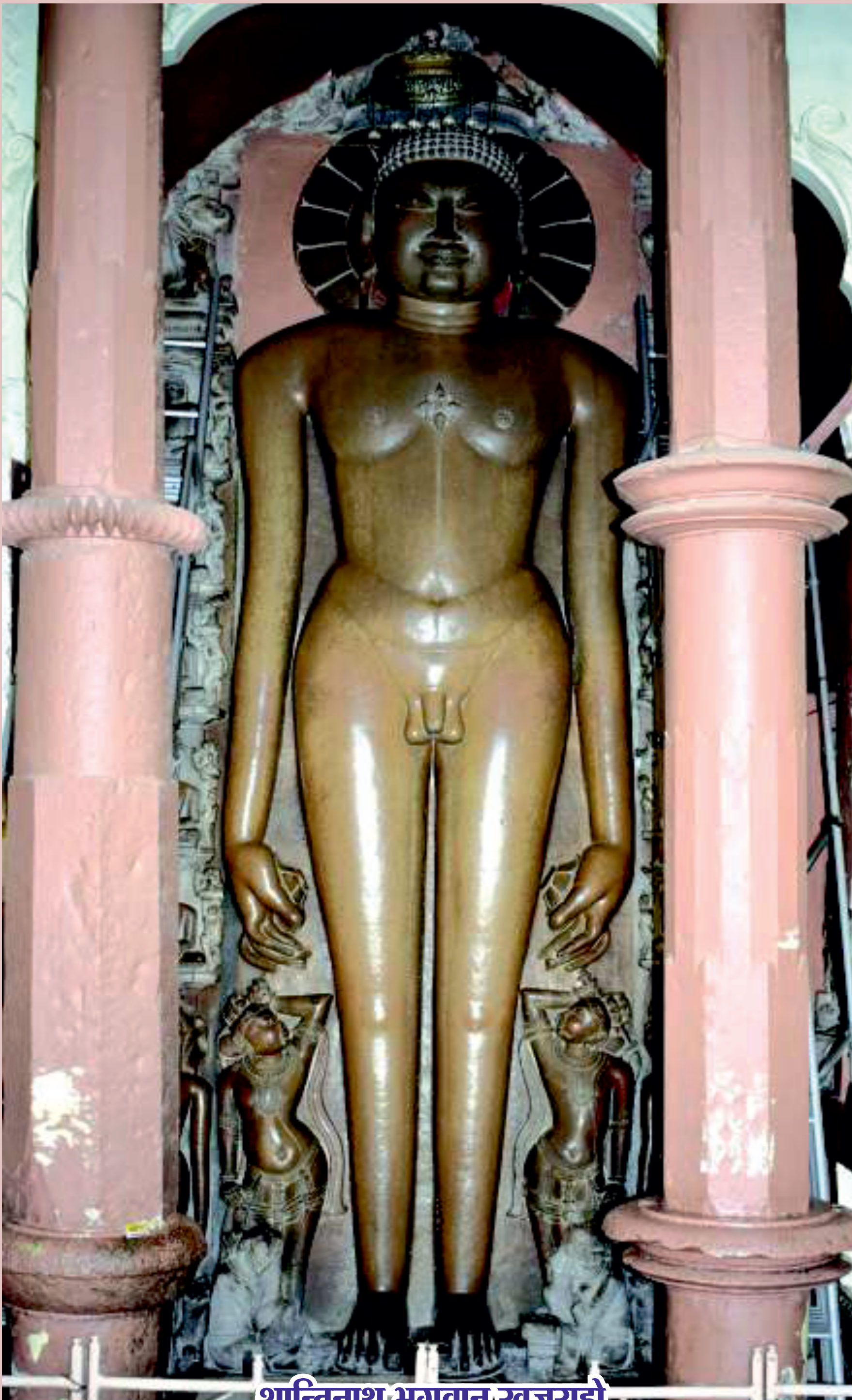
शान्तिनाथ भगवान खजुराहो

आचार्य पूज्यपादादि की

सटीक-परिभाषायें

- कृति : सटीक-परिभाषायें
- संकलन/संयोजन : मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज
- संस्करण : षष्टम, फरवरी 2025
- आवृत्ति : 1100
- मूल्य : सदुपयोग
- प्राप्ति स्थल : 1. श्री प्रशान्त जैन, भोपाल (म.प्र.)
  मो. 9617700813
  2. 'गुणायतन' शिखर जी, मधुवन
  फोन : 06558-232438
  3. संजय जैन, अवनी बुक डिपो,
  मानसरोवर कॉम्पलेक्स, भोपाल (म.प्र.)
  मो. 98939-03835
- पुण्यार्जक : श्रीमती मैना बाई
  अनिल-मीना जैन, अरविंद-अनामिका जैन
  अरनव महासेन एवं समस्त परिवार
  कोह-ए-फिजा (कान्हागढ़) भोपाल (म.प्र.)
- प्रकाशक : निर्ग्रन्थ फाउण्डेशन, भोपाल
- मुद्रक : विकास आफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
  45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र
  गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)
  फोन : 0755-2601952, 425005624

संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रवचन मुनि श्री 108 संधानसागरजी महाराज द्वारा लिखित (16 भाग में) एवं अन्य बहुत सी जानकारी प्राप्त करें :-

108guruvani.blogspot.in

विषयानुक्रम

1.	सर्वार्थसिद्धि	03
2.	मूलाचार	51
3.	आलाप पद्धति	86

सर्वार्थसिद्धि की परिभाषाएँ

(प्रथमोऽध्यायः)

सम्यक्दर्शन – **तत्त्वार्थस्य श्रद्धानं तत्त्वार्थश्रद्धानं, सम्यग्दर्शनम्।**

तत्त्वार्थ का श्रद्धान, तत्त्वार्थ श्रद्धान कहलाता है, उसे ही सम्यग्दर्शन कहते हैं।

सम्यग्ज्ञान – **येन-येन प्रकारेण जीवादयः पदार्था व्यवस्थितास्तेन तेनावगमः सम्यग्ज्ञानम्।**

जिस-जिस प्रकार से जीवादिक पदार्थ अवस्थित हैं उस प्रकार से उनका जानना सम्यग्ज्ञान है।

सम्यग्चारित्र – **कर्मादाननिमित्तक्रियोपरमः सम्यक् चारित्रम्।**

कर्मों के ग्रहण करने में निमित्तभूत क्रिया के उपरम होने को सम्यक्चारित्र कहते हैं।

जीव – **चेतना लक्षणोजीवः।**

जीव का लक्षण चेतना है।

अजीव – **अचेतन लक्षणो अजीवः।**

अजीव का लक्षण अचेतन है।

आस्त्रव – **शुभाशुभकर्मागमद्वार रूप आस्त्रवः।**

शुभ और अशुभ कर्मों के आने के द्वार रूप आस्रव है।

बंध – **आत्मकर्मणोरन्योऽन्यप्रदेशानुप्रवेशात्मको बंधः।**

आत्मा और कर्म के प्रदेशों का परस्पर मिल जाना बंध है।

संवर – **आस्त्रव निरोध लक्षण संवरः।**

आस्रव का रोकना संवर है।

निर्जरा	– **एकदेशकर्मसंक्षयलक्षणा निर्जरा: ।** कर्मों का एक देश अलग होना निर्जरा है ।
मोक्ष	– **सर्वकर्मविप्रमोक्षो मोक्ष: ।** सब कर्मों का आत्मा से अलग हो जाना मोक्ष है ।
नाम	– **अतद्गुणे वस्तुनिसंव्यवहारार्थं पुरुषकारा-न्नियुज्यमानं संज्ञाकर्म नाम ।** संज्ञा के अनुसार गुण रहित वस्तु में व्यवहार के लिए अपनी इच्छा से की गयी संज्ञा को नाम कहते हैं ।
स्थापना	– **स्थाप्यमाना स्थापना ।** स्थापित करने को स्थापना कहते हैं ।
द्रव्य	– **गुणैगुणान्वा द्रुतं गतं गुणैर्द्रोष्यते गुणान्द्रोष्यतीति द्रव्यम् ।** जो गुणों के द्वारा प्राप्त हुआ था, या गुणो को प्राप्त हुआ था अथवा जो गुणों के द्वारा प्राप्त किया जायेगा उसे द्रव्य कहते हैं ।
भाव	– **वर्तमान पर्यायोपलक्षित द्रव्यं भाव: ।** वर्तमान पर्याय से युक्त द्रव्य को भाव कहते हैं ।
प्रमाण	– **प्रमिणोति प्रमीयत्तेउनेन प्रमितिमात्रं व प्रमाणम् ।** जो अच्छी तरह मान करता है, जिसके द्वारा अच्छी तरह मान किया जाता है या प्रमिति मात्र प्रमाण है ।
द्रव्यार्थिकनय	– **द्रव्यमर्थ: प्रयोजनमस्येत्यसौ द्रव्यार्थिक नय: ।** द्रव्य जिसका प्रयोजन है वह द्रव्यार्थिक नय है ।
पर्यायार्थिकनय	– **पर्यायोऽर्थ: प्रयोजनमस्येत्यसौ पर्यायार्थिक नय: ।** पर्याय जिसका प्रयोजन है वह पर्यायार्थिक नय है ।

निर्देश	– **स्वरूपाभिधानम् निर्देशः।** किसी वस्तु के स्वरूप का कथन करना निर्देश है।
स्वामी	– **आधिपत्यम् स्वामित्वं।** स्वामित्व का अर्थ आधिपत्य है।
साधन	– **उत्पत्ति निमित्तम् साधनं।** जिस निमित्त से वस्तु उत्पन्न होती है वह साधन है।
अधिकरण	– **अधिष्ठानम् अधिकरणं।** अधिष्ठान या आधार अधिकरण है।
स्थिति	– **कालपरिच्छेदः स्थिति।** जितने काल तक वस्तु रहती है उसे स्थिति कहते हैं।
विधान	– **प्रकारः विधानं।** विधान का अर्थ प्रकार या भेद है।
सत्	– **अस्तित्व निर्देशः सत्।** सत् अस्तित्व का सूचक है।
संख्या	– **भेद गणना संख्याः।** संख्या से भेदों की गणना लेते है।
क्षेत्र	– **वर्तमान काल विषयः निवासो क्षेत्रं।** वर्तमान काल विषयक निवास को क्षेत्र कहते हैं।
स्पर्शन	– **त्रिकाल गोचरम् स्पर्शनम्।** त्रिकाल विषयक निवास को स्पर्शन कहते हैं।
काल	– **मुख्योव्यावहारिकश्च कालः द्विविधः।** मुख्य और व्यवहार के भेद से काल दो प्रकार का है।
अन्तर	– **विरहकालः अन्तरं।** विरहकाल को अन्तर कहते है।

भाव	– **औपशमिकादि लक्षणः भावः।** औपशमिकादि जिनके लक्षण है वे भाव है।
अल्पबहुत्व	– **अन्योऽन्यापेक्षया विशेष प्रतिपतिः अल्पबहुत्वं।** एक–दूसरे की अपेक्षा न्यूनाधिक का ज्ञान करने को अल्पबहुत्व कहते हैं।
मति	– **मननमात्रं मतिः।** मनन मात्र मति ज्ञान है।
श्रुत	– **श्रवणमात्रं श्रुतं।** सुनना मात्र श्रुत कहलाता है।
अवधि	– **अवच्छिन्न विषयाद्वा अवधिः।** परिमित विषय वाला होने से अवधि कहलाता है।
मनःपर्यय	– **परकीय मनोगतोऽर्थो मन इत्युच्यते। साहचर्यात्तस्य पर्ययणं परिगमनं मनः पर्ययः।** दूसरे के मनोगत अर्थ को मन कहते हैं। सम्बंध से उसका पर्ययण अर्थात परिगमन करने वाला ज्ञान मनः पर्यय कहलाता है।
केवलज्ञान	– **असहायम् केवलम्।** केवल शब्द असहायवाची है।
परोक्ष प्रमाण	– **पराणीन्द्रियाणि मनश्च उत्पद्यमानं परोक्षम्।** इन्द्रिय, मन और पर (प्रकाशादि) के निमित्त से होने के कारण परोक्ष कहलाता है।
प्रत्यक्ष प्रमाण	– **प्रक्षीणावरणं गप्रतिनियतं प्रत्यक्षम्।** आवरणरहित आत्मा के प्रति नियत होने से प्रत्यक्ष कहलाता है।
इन्द्रिय	– **इन्द्रस्यलिङ्ग इन्द्रियम्। (या) आत्मनः सूक्ष्मस्या–स्तित्वाधिगमे लिंङ्गमिन्द्रियम्।**

इन्द्र का लिंग इन्द्रिय कही जाती है अथवा जो गूढ़ पदार्थ का ज्ञान कराता है उसे लिंग कहते हैं।

अवग्रह – **विषयविषयिसंनिपातसमनन्तरमाद्यंग्रहणमवग्रहः।**

विषय और विषयी के सम्बन्ध के बाद होने वाले प्रथम ग्रहण को अवग्रह कहते हैं।

ईहा – **अवग्रहगृहीतेऽर्थे तद्विशेषाकाङ्क्षणमीहा।**

अवग्रह के द्वारा ग्रहण किये गये पदार्थों में उसके विशेष के जानने की इच्छा ईहा कहलाती है।

अवाय – **विशेष निर्ज्ञानाद्याथात्म्यावगमनमवायः।**

विशेष के निर्णय द्वारा जो यथार्थ ज्ञान होता है उसे अवाय कहते हैं।

धारणा – **कालान्तरेऽविस्मरणकारणं धारणाः।**

कालान्तर में विस्मरण नहीं होना धारणाा है।

बहु – **संख्यावैपुल्यवाचिनो बहुशब्दस्य।**

संख्यावाची और वैपुल्यवाची दोनो बहु हैं।

क्षिप्र – **अचिरप्रतिपत्तयर्थम् ग्रहणम् क्षिप्रः।**

जल्दी होने वाले ज्ञान को जताने के लिए क्षिप्र का ग्रहण होता है।

अनिःसृत – **असकल पुद्गलोद्गमार्थम् ग्रहणं अनिःसृत।**

जब पुरी वस्तु प्रकट न होकर कुछ प्रकट एवं कुछ अप्रकट होती है तब वह अनःिसृत कही जाती है।

निःसृत – **सकल निःसरणान्निःसृतम्।**

वस्तु का पुरा प्रकट होना निःसृत है।

उक्त – **अन्योपदेशपूर्वकं ग्रहणमुक्तम्।**

अन्य के उपदेशपूर्वक ग्रहण करना उक्त है।

अनुक्त – **अभिप्रायेण ग्रहणं अनुक्तं।**

जो अभिप्राय से जानी जाती है उसके ग्रहण के लिए अनुक्त है।

ध्रुव – **निरन्तरं यथार्थग्रहणम् ध्रुवं।**

जो यथार्थ ग्रहण निरन्तर होता है उसके लिए ध्रुव है।

अध्रुव – **न्युनाधिक भावाद अध्रुवः।**

जिसमें न्यूनाधिक भाव होता रहता है वह अध्रुव है।

अर्थ – **चक्षुरादिविषयोऽर्थः।**

चक्षु आदि इन्द्रियों का विषय अर्थ कहलाता है।

व्यञ्जन – **अव्यक्तं शब्दादिजातं व्यञ्जनं।**

अव्यक्त शब्दादि के समूह को व्यञ्जन कहते हैं।

भव – **आयुर्नामकर्मोदयनिमित्त आत्मनः पर्यायोभवः।**

आयु नामकर्म के उदय का निमित्त पाकर जो जीव की पर्याय होती है उसे भव कहते है।

विशुद्धि – **आत्मनः प्रसादो विशुद्धि।**

आत्मा की निर्मलता विशुद्धि है।

नैगमनय – **संकल्प मात्रग्राही नैगमः।**

संकल्प मात्र को ग्रहण करने वाला नय नैगम है।

संग्रहनय – **स्वजाति अविरोधेन समस्त ग्रहणात्संग्रह।**

अपनी जाति के अविरोध द्वारा सब को ग्रहण करने वाला संग्रह नय है।

व्यवहारनय – **विधिपूर्वकमवहरणं व्यवहारः।**

विधीपूर्वक अवहरण अर्थात भेद करना व्यवहार नय है।

ऋजुसूत्रनय – **ऋजुं प्रगुणं सूत्रयति तन्त्रयतीति ऋजुसूत्रः।**

ऋजु का अर्थ प्रगुण है, जो ऋजु अर्थात सरल को सूत्रित करता है वह ऋजु सूत्र नय है।

शब्दनय – **लिङ्गसंख्यासाधनादिव्यभिचार निवृत्ति परः शब्दनयः।**

लिंग, संख्या और साधन आदि के व्यभिचार की निवृत्ति करने वाला शब्द नय है।

समभिरुढ़नय – **नानार्थ समभिरोहणात्समभिरुढः।**

नाना अर्थों का समभिरोहण करने वाला नय समभिरूढ़ नय है।

एवंभूतनय – **येनात्मना भूतस्तेनैवाध्यवसाययतीति एवंभूतः।**

जो वस्तु जिस पर्याय को प्राप्त हुई है उसी रूप निश्चय करने वाला नय एवंभूत नय है।

वीतराग. स.द. – **आत्माविशुद्धिमात्रमितरत्।**

(द्वितीयोऽध्यायः)

उपशम – **आत्मनि कर्मणः स्वशक्तेः कारणवशाद-नुद्भूतिरुपशमः।**

आत्मा में कर्म की निज शक्ति का कारण वश से प्रकट न होना उपशम है।

क्षय – **क्षयः आत्यन्तिकी निवृत्तिः।**

कर्मों का आत्मा से सर्वथा दूर हो जाना क्षय है।

क्षायोपशमिक – **उभयात्मको मिश्रः।**

उभय रूप भाव मिश्र भाव है।

उदय – **फलप्राप्तिरुदयः।**

कर्मों के फल का प्राप्त होना उदय है।

परिणाम – **द्रव्यात्मलाभमात्रहेतुकः परिणामः।**

द्रव्य का स्वरूप लाभ मात्र कारण है, वह परिणाम है।

उपशम सम्यग्दर्शन – **सप्तानां प्रकृतिनाम् उपशमाद् उपशम सम्यक्त्वं।**

सात प्रकृतियों के उपशम से औपशमिक सम्यक्त्व होता है।

उपशम चारित्र – **कृत्स्नस्य मोहनीयस्य उपशमाद् उपशम चारित्रं।**

समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से औपशमिक चारित्र होता है।

क्षायिक सम्यग्दर्शन – **सप्तानां प्रकृतिनां अत्यन्त क्षयात्।**

सात प्रकृतियों के अत्यन्त विनाश से क्षायिक सम्यक्त्व होता है।

लिङ्ग – **लीनमर्थं गमयतीति लिङ्गं।**

अर्थ की ओर ले जाने वाला अर्थबोध कराने वाला लिङ्ग है।

अज्ञान – **पदार्थ अनवबोधो तद्ज्ञानम्**

पदार्थो के नहीं जानने को अज्ञान कहते है।

असंयत – **चारित्रमोहस्य सर्वघातिस्पर्द्धकस्योदयाद-संयतः।**

असंयत भाव चारित्र मोहनीय कर्म के सर्वघाती स्पर्द्धकों के उदय से होता है।

लेश्या – **कषायोदय रञ्जितायोगप्रवृत्ति भाव लेश्याः।**

कषाय के उदय से अनुरंजित योग की प्रवृत्तिरूप भाव लेश्या है।

भव्यऽभव्य – **सम्यग्दर्शनादिभावेन भविष्यतीति भव्यः। तद्विपरीतोऽभव्यः।**

जिसके सम्यग्दर्शन आदि भाव प्रकट होने की योग्यता है, वह भव्य कहलाता है। अभव्य इसका उल्टा है।

उपयोग – **चैतन्य अनुविधायी परिणाम उपयोगः।**

चैतन्य का अन्वयी है वह परिणाम उपयोग कहलाता है।

संसार – **संसरणं संसारः परिवर्तनमित्यर्थः।**

संसरण करने को संसार कहते हैं, जिसका अर्थ परिवर्तन है।

समनस्क – **मनसा सह वर्तन्त इति समनस्काः।**

मन जिन जीवों के पाया जाता है वे समनस्क है।

अमनस्क – **न विद्यते मनो येषां त इमे अमनस्काः।**

जिनके मन नहीं पाया जाता है वे अमनस्क है।

द्रव्यमन – **पुद्‌गल विपाकिकर्मोदयापेक्षं द्रव्यमनः।**

पुद्‌गल विपाकी अंगोपांग नामकर्म के उदय से द्रव्यमन होता है।

भावमन – **वीर्यान्तराय नोइन्द्रियावरणक्षयोपशमा–पेक्षयात्मनो विशुद्धिर्भावमनः।**

वीर्यान्तराय और नो इन्द्रियावरण कर्म के क्षयोपशम की अपेक्षा रखने वाली आत्मा की विशुद्धि को भावमन कहते हैं।

त्रस – **त्रसनामकर्मोदयवशीकृतास्त्रसाः।**

जिनके त्रस नामकर्म का उदय है वे त्रस कहलाते है।

स्थावर – **स्थावरनामकर्मोदयवशवर्तिनः स्थावराः।**

जिनके स्थावर नामकर्म का उदय है उन्हें स्थावर कहते हैं।

निर्वृत्ति	– **निर्वर्त्यते इति निर्वृत्तिः।** रचना का नाम निर्वृत्ति है।
उपकरण	– **निर्वृतेरुपकारः क्रियते तदुपकरणम्।** जो निर्वृत्ति का उपकार करता है उसे उपकरण कहते है।
लब्धि	– **ज्ञानावरणकर्मक्षयोपशमविशेषः लब्धिः।** ज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशम विशेष को लब्धि कहते हैं।
विग्रहगति	– **विग्रहो देहः। विग्रहार्था गतिर्विग्रहगतिः।** विग्रह का अर्थ देह है। विग्रह अर्थात् शरीर के लिए जो गति होती है वह विग्रह गति है।
श्रेणी	– **आकाशप्रदेशानां पङ्क्तिः श्रेणिः।** आकाश प्रदेशों की पंक्ति को श्रेणी कहते हैं।
आहारऽनाहारक	– **त्रयाणां शरीराणां षण्णां पर्याप्तीनां योग्य-पुद्गल ग्रहणमाहार तद्भावा-दनाहारकः।** तीन शरीर और छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों के ग्रहण करने को आहार कहते हैं। जिन जीवो के इस प्रकार का आहार नहीं होता वे अनाहारक कहलाते हैं।
संमूर्च्छन	– **देहस्य समन्ततो मूर्च्छनं संमूर्च्छनम्।** देह का चारों ओर से मूर्च्छन अर्थात् ग्रहण होना संमूर्च्छन है।
गर्भ	– **स्त्रिया उदरे शुक्रशोणितयोर्गरणं मिश्रणं गर्भः।** स्त्री के उदर में शुक्र और शोणित के परस्पर गरण अर्थात् मिश्रण को गर्भ कहते हैं।

उपपाद – **उपेत्य पद्यतेऽस्मिन्निति उपपादः।**

प्राप्त होकर जिसमें जीव हलन–चलन करता है, उसे उपपाद कहते है।

सचित्त – **सह चित्तेन वर्तत इति सचित्तः।**

जो चित्त के साथ रहता है वह सचित्त कहलाता है।

शीत – **शीत इति स्पर्श विशेषः।**

शीत यह स्पर्श का एक भेद है।

संवृत – **सम्यग्वृत संवृतः।**

जो भले प्रकार ढका हो वह संवृत कहलाता है।

जरायु – **यज्जालवत्प्राणिपरिवरणं विततमांसशोणितं तज्जरायुः।**

जो जाल के समान प्राणियों का आवरण है और जो मांस और शोणित से बना है, उसे जरायु कहते है।

अण्ड – **यन्नखत्वक्सदृशमुपात्तकाठिन्यं शुक्रशोणित परिवरणं परिमण्डलं तद्ण्डम्।**

जो नख की त्वचा के समान कठिन है, गोल है और जिसका आवरण शुक्र और शोणित से बना है, उसे अण्ड कहते है।

पोत – **परिपूर्णावयवो योनिनिर्गतमात्र एव परिस्पन्दा–दिसामर्थ्योपेतः पोतः।**

जिसके सब अवयव बिना आवरण के पूरे हुये है और जो योनि से निकलते ही हलन–चलन आदि सामर्थ्य से युक्त है, उसे पोत कहते हैं।

शरीर – **शीर्यन्त इति शरीराणि।**

जो गलते हैं वे शरीर है।

औदारिक – **उदारं स्थूलम् औदारिकं।**

जो उदार अर्थात् स्थल है, वह औदारिक है।

वैक्रियिक – **अष्टगुणैश्वर्ययोगादेकानेकाणुमहच्छरीर-विधिकरण विक्रिया, सा प्रयोजनमस्येति वैक्रियिकम्।**

अणिमा आदि आठ गुणों के ऐश्वर्य के सम्बन्ध से एक, अनेक, छोटा, बड़ा आदि नाना प्रकार का शरीर करना विक्रिया है। यह विक्रिया जिस शरीर का प्रयोजन है वह वैक्रियिक शरीर है।

आहारक – **सूक्ष्म पदार्थनिर्ज्ञानार्थमसंयमपरिजिहीर्षया वा प्रमत्तसंयतेन अह्रियते निर्वर्त्यते तदित्याहारकम्।**

सूक्ष्म पदार्थ का ज्ञान करने के लिए या असंयम को दूर करने की इच्छा से प्रमत्तसंयत जिस शरीर की रचना करता है वह आहारक शरीर है।

तैजस – **यत्तेजोनिमित्तं तेजसि वा भवं तत्तैजसम्।**

जो तेज में उत्पन्न होता है (दीप्ति का कारण है) उसे तैजस शरीर कहते हैं।

कार्मण – **कर्मणां कार्य कार्मणम्।**

कर्मों का कार्य कार्मण शरीर है।

उपभोग – **इन्द्रियप्रणालिकया शब्दादीनाम उपलब्धि उपभोगः।**

इन्द्रिय रूपी नालियों के द्वारा शब्दादि के ग्रहण करने को उपभोग कहते हैं।

अपवर्त्यआयु – **बाह्यस्योपघातनिमित्तस्य विषशस्त्रादेः सति संनिधाने ह्रस्वं भवतीत्यपवर्त्यम्।**

उपघात के निमित्त विष शस्त्रादिक बाह्य निमित्तों के मिलने पर जो आयु घट जाती है, वह अपवर्त्य आयु कहलाती है।

प्रतिघात – **मूर्तिमतो मूर्त्यन्तरेण व्याघातः प्रतिघातः।**

एक मूर्तिक पदार्थ का दूसरे मूर्तिक पदार्थ के द्वारा जो व्याघात होता है उसे प्रतिघात कहते है।

प्रदेश – **प्रदिश्यन्ते इति प्रदेशाः परमाणवः।**

प्रदेश शब्द की व्युत्पत्ति ''प्रदिश्यन्ते'' से होती है। इसका अर्थ परमाणु है।

(तृतीयोऽध्यायः) (चतुर्थोऽध्यायः)

आर्य – **गुणैर्गुणवद्भिर्वा अर्यन्त इत्यार्याः।**

जो गुणों या गुण वालीं के द्वारा माने जाते हैं– वे आर्य कहलाते हैं।

कर्मभूमि – **शुभाशुभलक्षणस्य कर्मणोऽधिष्ठानत्वात्।**

शुभ और अशुभ कर्मों का आश्रय हो उसे कर्मभूमि कहते है।

भोगभूमि – **दशविधकल्पवृक्ष कस्पित भोगानुभवन-विषयत्वाद् भोगभूमयः।**

दश प्रकार के कल्पवृक्षों से प्राप्त भोगो की मुख्यता है इसलिए वे भोगभूमियाँ है।

देव – **द्वीपादिसमुद्रादि प्रदेशेषु यथेष्टं दीव्यान्ति क्रीडन्तीति देवाः।**

जो द्वीपादि, समुद्रादि अनेक स्थानों पर इच्छानुसार क्रीडा करते है, वे देव कहलाते है।

इन्द्र – **अन्यदेवासाधारणाणिमादिगुणयोगा - दिन्दन्तीति इन्द्राः।**

जो अन्य देवो में असाधारण अणिमादि गुणों के सम्बन्ध से शोभते है वे इन्द्र कहलाते हैं।

सामानिक	–	**आज्ञैश्वर्य वर्जितं सामानिका।** आज्ञा और एश्वर्य के बिना इन्द्र के समान है अतः सामानिक कहलाते है।
त्रायस्त्रिंश	–	**मन्त्रिपुरोहितस्थानीयास्त्रायस्त्रिंशाः।** जो मंत्री और पुरोहित के समान है वे त्रायस्त्रिंश है।
पारिषद	–	**वयस्य पीठमर्दसदृशाः परिषदि भवाः पारिषदाः।** जो सभा में मित्र और प्रेमीजनो के समान होते है वे पारिषद कहलाते हैं।
आत्मरक्ष	–	**शिरोरक्षोपमानाः आत्मरक्षाः।** जो अंगरक्षक के समान है वे आत्मरक्ष कहलाते हैं।
लोकपाल	–	**अर्थचरा रक्षक समाना लोकपालः। लोकं पालयन्तीति लोकपालः।** जो रक्षक के समान अर्थचर है वे लोकपाल कहलाते हैं अर्थात् जो लोक का पालन करते हैं वे लोकपाल कहलाते हैं।
अनीक	–	**पदात्यादीनि सप्त अनीकानि।** सात प्रकार के पदाति आदि अनीक कहलाते है।
प्रकीर्णक	–	**पौरजानपदकल्पाः प्रकीर्णकाः।** जो गाँव और शहरों में रहने वालों के समान है, उन्हें प्रकीर्णक कहते हैं।
आभियोग्य	–	**दाससमाना वाहनादिकर्मणि प्रवृताः आभि-योग्याः।** जो दास के समान वाहयोग्य आदि कर्म में प्रवृत्त होते हैं, वे आभियोग कहलाते हैं।
किल्विषिक	–	**अन्तेवासिनोस्थानीयाः, किल्विषं पापंयेषाम स्तीति किल्विषिकाः।**

जो सीमा के पास रहने वालों के समान है अथवा किल्विष पाप को कहते है इसकी जिनके बहुलता होती है वे किल्विषिक कहलाते हैं।

स्थिति – **स्वोपात्तस्यायुष उदयात्तस्मिन्भवे शरीरेण सह्यवस्थानं स्थितिः।**

अपने द्वारा प्राप्त हुई आयु के उदय से उस भव में शरीर के साथ रहना स्थिति कहलाती है।

प्रभाव – **शापानुग्रह शक्ति प्रभावः।**

शाप और अनुग्रह रूप शक्ति को प्रभाव कहते हैं।

सुख – **सुखमिन्द्रियार्थानुभव।**

इन्द्रियों के विषयों के अनुभवन करने को सुख कहते हैं।

द्युति – **शरीरवसनाभरणादिदीप्तिः द्युतिः।**

शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि की क्रान्ति को द्युति कहते हैं।

गति – **देशाद्देशान्तरप्राप्ति हेतुर्गतिः।**

एक देश से दूसरे देश के प्राप्त करने का जो साधन है उसे गति कहते हैं।

परिग्रह – **लोभकषायोदयाद्विषयेषु सङ्गपरिग्रह।**

लोभ कषाय के उदय में विषयों के संघ को परिग्रह कहते हैं।

अभिमान – **मानकषायादुत्पन्नोऽहंकारोऽभिमानः।**

मान कषाय के उदय से उत्पन्न अहंकार को अभिमान कहते हैं।

अन्तर्मुहूर्त – **अन्तर्गतो मुहूर्तो यस्याः सा अन्तर्मुहूर्ता।**

मुहूर्त के भीतर के काल को अन्तर्मुहूर्त कहते है।

लौकान्तिक – **लोकान्ते भवा लौकान्तिकाः।**
संसार के अन्त में जो होते हैं, वे लौकान्तिक है।

प्रवीचार – **मैथुनोपसेवनम् प्रवीचारः।**
मैथुनद्वारा उपसेवन को प्रवीचार कहते हैं।

(पंचमोऽध्यायः)

काय – **प्रदेश बहुत्व ज्ञापनार्थः।**
बहुप्रदेश का ज्ञान कराने के लिए काय का प्रयोग करते है।

द्रव्य – **यथास्वं पर्यायैद्रुयन्ते द्रवन्ति वा तानि इत द्रव्याणि।**
जो यथायोग्य अपनी–अपनी पर्यायो के द्वारा प्राप्त होते है या पर्यायों को प्राप्त होते हैं वे द्रव्य कहलाते है।

नित्य – **नित्यं ध्रुवमित्यर्थः।**
नित्य शब्द का अर्थ ध्रुव है।

अवस्थित – **इयत्ताऽव्यभिचारादवस्थितानि।**
संख्या का कभी व्यभिचार नहीं होता– वह अस्थित है।

रूपी – **रूपं मूर्ति इत्यर्थः।**
रूप और मूर्ति एक ही अर्थ वाले है।

क्रिया – **पर्यायो द्रव्यस्य देशान्तरप्राप्ति हेतुः क्रिया।**
जो पर्याय द्रव्य के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्राप्त कराने का कारण है वह क्रिया कहलाती है।

असंख्यात – **संख्यामतीता असंख्येयाः।**
जो संख्या से परे है, वह असंख्यात कहलाता है।

प्रदेश – **परमाणुः स यावति क्षेत्रे व्यवतिष्ठते स प्रदेशः।**
परमाणु जितने क्षेत्र में रहता हैं, वह प्रदेश है।

अनन्त – **अविद्यमानोऽन्तो येषां ते अनन्ताः।**
जिनका अन्त नहीं हैं वे अनन्त कहलाते हैं।

लोक – **धर्माधर्मादीनि द्रव्याणि यत्र लोक्यन्ते स लोकः।**
जहाँ द्रव्यादि द्रव्य विलोके जाते हैं उसे लोक कहते हैं।

वर्तना – **वर्तनामात्रं वर्तनाः।**
वर्तनामात्र वर्तना है।

परिणाम – **द्रव्यस्य पर्यायो अपरिस्पन्दात्मकः परिणामः।**
परिस्पन्द से रहित द्रव्य की जो पर्याय है, उसे परिणाम कहते है।

परमार्थ काल – **परमार्थकालो वर्तना लक्षणः।**
परमार्थ काल वर्तना लक्षण वाला है।

व्यवहार काल – **परिणामादि-लक्षणोव्यवहार कालः।**
परिणाम आदि लक्षण वाला व्यवहार काल है।

तम – **दृष्टि प्रतिबन्धकारणं प्रकाश विरोधि तमः।**
जिससे दृष्टि में प्रतिबंध होता है और जो प्रकाश का विरोधी है वह तम कहलाता है।

छाया – **प्रकाशावरणनिमित्ता छायाः।**
प्रकाश को रोकने वाले पदार्थों के निमित्त से जो पैदा होती है वह छाया कहलाती है।

आतप – **उष्णप्रकाशलक्षणः आतपः।**
उष्ण प्रकाश होता है उसे आतप कहते है।

उद्योत – **चन्द्रमणिखद्योतादिप्रभवः उद्योतः।**
चन्द्रमणि और जुगनू आदि है निमित्त से जो प्रकाश पैदा होता है उसे उद्योत कहते है।

संघात – **पृथग्भूतानामेकत्वापत्ति संघातः।**

पृथक्भूत हुए पदार्थो के एक रूप हो जाने को संघात कहते है।

अणु – **प्रदेशमात्रभाविस्पर्शादि पर्याय प्रसव सामर्थ्येनाण्यन्ते शब्द्यन्त इत्यणवः।**

एक प्रदेश में होने वाले स्पर्शादि पर्याय को उत्पन्न करने की सामर्थ्य रूप से जो 'अण्यन्ते' अर्थात् कहे जाते हैं, वे अणु कहलाते हैं।

भेद – **संघातानां द्वितयनिमित्तवशादिवारणं भेदः।**

अंतरंग और बहिरंग इन दोनों प्रकार के निमित्तों से संघातो के विदारण करने को भेद कहते हैं।

उत्पाद – **भावान्तरावाप्तिरुत्पादनं उत्पादः।**

प्रतिसमय नवीन अवस्था की प्राप्ति को उत्पाद कहते हैं।

व्यय – **पूर्वभावविगमनं व्ययः।**

पूर्व अवस्था के त्याग को व्यय कहते हैं।

ध्रौव्य – **स्थिरीभवतीति ध्रुवः। ध्रुवस्य भावः कर्म वा ध्रौव्यम्।**

स्थिर रहता है अतः ध्रुव कहलाता है इस ध्रुव का भाव या कर्म ध्रौव्य कहलाता है।

स्निग्ध – **स्नेहपर्यायाविर्भावात् स्निह्यते स्मेति स्निग्धः।**

स्नेह पर्याय उत्पन्न होने के कारण उसे पुद्‌गल स्निग्ध कहते हैं।

अर्पितानर्पित – **प्राधान्यम् अर्पितम् तद्विपरीतम् अनर्पितम्।**

प्रधान को अर्पित और जो प्रधान नहीं है उसे अनर्पित कहते हैं।

रुक्ष – **रुक्षणाद रुक्षाः।**
रूखापन के कारण पुद्‌गल रूक्ष कहा जाता है।

पर्याय – **व्यतिरेकिणः पर्यायाः।**
पर्याय व्यतिरेकी होती है।

मूर्ति – **रुपादि संस्थान परिणतो मुर्तिः।**
रूपादि संस्थान के परिणाम को मूर्ति कहते है।

अरूपी – **अरुपाणि अमूर्तानी इत्यर्थः।**
अरूपी का अर्थ अमूर्त होता है।

(षष्ठोऽध्यायः)

योग – **आत्म प्रदेश परिस्पन्दो योगः।**
आत्मा के प्रदेशों का परिस्पन्द–हलन चलन योग है।

शुभयोग – **शुभ परिणाम निवृत्तोयोगः शुभयोगः।**
जो योग शुभ परिणाम के निमित्त से होता है वह शुभयोग है।

पुण्य – **पुनात्यात्मानं पूयतेऽनेनेति वा पुण्यम्।**
जो आत्मा को पवित्र करता है या जिससे आत्मा पवित्र होती है वह पुण्य है।

पाप – **पाति रक्षति आत्मानं शुभादिति पापम्।**
जो आत्मा को शुभ से बचाता है, वह पाप है।

सांपरायिक कर्म – **संपरायः संसारः तत्प्रयोजनं कर्म सांपरायिकम्।**
जो कर्म संसार का प्रयोजक है, वह साम्परायिक कर्म है।

अधिकरण – **अधिक्रियन्तेऽस्मिन्नर्था इत्यधिकरणं।**
जिसमें पदार्थ रखे जाते है वह अधिकरण है।

वीर्य – **द्रव्यस्य स्वशक्ति विशेषो वीर्यम्।**

द्रव्य की अपनी शक्ति विशेष वीर्य है।

संरम्भ – **प्राणाव्यपरोपणादिषु प्रमादवतः प्रयत्नावेशः संरम्भः।**

प्रमादी जीव का प्राणों की हिंसा आदि कार्य में प्रयत्नशील होना संरम्भ है।

समारम्भ – **साधनसमभ्यासीकरणं समारम्भः।**

साधनों का जुटाना समारम्भ है।

आरम्भ – **प्रक्रम आरम्भः।**

कार्य करने लगना आरम्भ है।

विशेष – **विशिष्यतेऽर्थोऽर्थातरादिति विशेषः।**

एक अर्थ दूसरे अर्थ से विशेषता को प्राप्त हो, वह विशेष है।

निर्वर्तना – **निष्पादना निर्वर्तना।**

निर्वर्तना का अर्थ निष्पादना अर्थात् रचना है।

निक्षेप – **स्थापना निक्षेपः।**

निक्षेप का अर्थ स्थापना अर्थात् रखना है।

संयोग – **मिश्रीकृतम संयोगः।**

संयोग का अर्थ मिश्रित करना अर्थात् मिलाना है।

निसर्ग – **प्रवर्तनम् निसर्गः।**

निसर्ग का अर्थ प्रवर्तन हैं।

प्रदोष – **पैशुन्य परिणामः प्रदोषः।**

पैशुन्य रूप परिणाम वह प्रदोष है।

निह्नव – **ज्ञानस्य व्यपलपनं निह्नव।**

ज्ञान का अपलाप करना निह्नव है।

मात्सर्य – **कुतश्चित्कारणाद् भावितमपि विज्ञानं दानार्हमपि यतो न दियते तन्मात्सर्यम्।**

विज्ञान का अभ्यास किया है, वह देने योग्य भी है तो जिस कारण से वह नहीं दिया जाता है वह मात्सर्य है।

अन्तराय – **ज्ञानव्यवछेदकरणमन्तराय।**

ज्ञान का विच्छेद करना अन्तराय है।

उपघात – **प्रशस्तज्ञानदूषणमुपघातः।**

प्रशंसनीय ज्ञान में दूषण लगाना उपघात है।

दुख – **पीड़ालक्षणः परिणामो दुःखम्।**

पीड़ा रूप आत्मा का परिणाम दुःख है।

शोक – **अनुग्राहकसम्बन्धविच्छेदे वैक्लव्यविशेषः शोकः।**

उपकार करने वाले का सम्बन्ध टूट जाने पर जो विकलता होती है वह शोक है।

ताप – **परिवादादिनिमित्तादाविलान्तः करणस्य तीव्रानुशयस्तापः।**

अपवाद आदि के निमित्त से मन के खिन्न होने पर जो तीव्र अनुशय (संताप) होता है वह ताप है।

आक्रन्दन – **अश्रुपात प्रचुरविलापादिभिर्व्यक्तक्रन्दनमाक्रन्दनम्।**

जो आँसू गिरने के साथ विलाप आदि होता है, उससे खुलकर रोना आक्रन्दन है।

वध – **प्राणवियोगकरणं वधः।**

प्राणों का वियोग कर देना वध है।

परिदेवन – **संक्लेशपरिणामावलम्बनं गुणस्मरणानुकीर्तन-पूर्वकं स्वपरानुग्रहभिलाषविषयमनुकम्पा प्रचुरं रोदनं परिदेवनम्।**

संक्लेश रूप परिणामों के होने पर गुणों का स्मरण और प्रशंसा करते हुए अपने और दूसरे के उपकार की अभिलाषा से करुणाजनक रोना परिदेवन है।

अनुकंपा – **परपीडामात्मस्थमिव कुर्वतोऽनुकम्पनमनु-कम्पा।**

दूसरे की पीड़ा को अपनी ही मानने का जो भाव होता है उसे अनुकम्पा कहते हैं।

दान – **परानुग्रहबुद्धया स्वस्यातिसर्जनं दानम्।**

दूसरे का उपकार हो इस बुद्धि से अपनी वस्तु का अर्पण करना दान है।

संयम – **अशुभप्रवृत्तेर्विरतिः संयमः।**

अशुभ प्रवृत्ति के त्याग को संयम कहते हैं।

क्षान्ति – **क्रोधादि निवृत्ति क्षान्तिः।**

क्रोधादि दोषों का निराकरण करना क्षान्ति है।

शौच – **लोभप्रकारणामुपरमः शौचम्।**

लोभ के प्रकारों का त्याग करना शौच है।

सराग – **संसारकारणनिवृत्तिं प्रत्यागूर्णोऽक्षी-णाशयः सराग।**

जो संसार के कारणों के त्याग के प्रति उत्सुक है, परन्तु जिसके अभी राग के संस्कार नष्ट नहीं हुए हैं वह सराग कहलाता है।

केवली – **निरावरणज्ञानाः केवलिनः।**

जिनका ज्ञान आवरण रहित है वे केवली कहलाते हैं।

श्रुत	– **गणधरानुस्मृतं ग्रन्थरचनं श्रुतं।** गणधर देव उपदेश का स्मरण करके जो ग्रन्थों की रचना करते हैं वह श्रुत कहलाता है।
संघ	– **रत्नत्रयोपेतः श्रमणगणः संघः।** रत्नत्रय से युक्त श्रमणों का समुदाय संघ कहलाता है।
धर्म	– **अहिंसालक्षणस्तदागमदेशितो धर्मः।** आगम में उपदिष्ट अहिंसा ही धर्म है।
अवर्णवाद	– **गुणवत्सु महत्सु असद्भूतदोषोद्भावनम् अवर्णावादः।** गुण वाले बड़े पुरुषों में जो दोष नहीं है उनका उनमें उद्भावन करना अवर्णवाद है।
उदय	– **उदयोविपाकः।** विपाक को उदय कहते हैं।
परिग्रह	– **ममेदं बुद्धिलक्षणः परिग्रहः।** यह वस्तु मेरी है इस प्रकार का संकल्प रखना परिग्रह है।
माया	– **आत्मनः कुटिलभावो मायाः।** आत्मा में जो कुटिल भाव पैदा होता है वह माया है।
मार्दव	– **मृदोर्भावो मार्दवम्।** मृदु का भाव मार्दव है।
विसंवाद	– **अन्यथा प्रवर्तनम् विसंवादनम्।** अन्यथा प्रवृत्ति करना विसंवाद है।
निन्दा	– **दोषस्योद्भावनं प्रति इच्छा निन्दा।** दोष को प्रकट करने की इच्छा निन्दा है।

प्रशंसा	– **गुणोद्भावनाभिप्रायः प्रशंसा।** गुणों के प्रकट करने का भाव प्रशंसा है।
उच्छादन	– **अनाविर्भाव उच्छादनम्।** प्रकट नहीं करने की वृत्ति होना उच्छादन है।
अनुत्सेक	– **ज्ञानादिमदविरहोऽनहंकारतानुत्सेकः।** ज्ञानादि का मद न करना – अहंकार नहीं करना अनुत्सेक है।
दर्शन विशुद्धि	– **मोक्षवर्त्मनि रुचिर्दर्शनविशुद्धिः।** मोक्षमार्ग पर रूचि रखना दर्शन विशुद्धि है।
विनयसंपन्नता	– **विनयस्तेन संपन्नता विनयसंपन्नता।** विनय से युक्त होना विनय सम्पन्नता है।
शीलव्रतेष्वमतिचार	– **अहिंसादिषु शीलेषु निरवद्या वृत्तिः शील-व्रतेष्वनतीचारः।** अहिंसादि और शील के पालन करने में निर्दोष प्रवृत्ति रखना शीलव्रतानतिचार है।
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग	– **सम्यज्ञाने नित्यं युक्ता अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोगः।** सम्यग्ज्ञान में निरन्तर लगे रहना अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग है।
संवेग	– **संसारदुःखान्नित्यभीरुता संवेगः।** संसार के दुःखो से निरन्तर डरते रहना संवेग है।
शक्तितस्त्याग	– **शक्तितो यथाविधि प्रयुज्यमानं त्याग शक्तितस्त्यागः।** शक्ति के अनुसार विधिपूर्वक देना यथाशक्ति त्याग है।
शक्तितस्तप	– **अनिगूहितवीर्यस्य मार्गाविरोधि काय-क्लेशस्तपः।**

शक्ति को न छिपाकर मोक्षमार्ग के अनुकूल शरीर को क्लेश देना यथाशक्ति तप है।

साधुसमाधी – **मुनेस्तपसः कुतश्चित्प्रत्यूहे समुपस्थिते तत्संधारणं समाधिः।**

मुनि के तप करते हुये किसी कारण से विघ्न उत्पन्न होने पर उसका संधारण करना साधुसमाधि है।

वैयावृत्य – **गुणवद्दुःखोपनिपाते तदपहरणं वैया-वृत्यम्।**

गुणी पुरुष के दुःख दूर करना वैयावृत्य है।

अरिहंत भक्ति
आचार्य भक्ति
बहुश्रुत भक्ति
प्रवचन भक्ति – **अर्हदाचार्येषु बहुश्रुतेषु प्रवचने च भावविशुद्धि-युक्तोऽनुरागो भक्तिः।**

अरिहंत, आचार्य, बहुश्रुत और प्रवचन इनमें भावों की विशुद्धि के साथ अनुराग रखना अरिहंत भक्ति, आचार्य भक्ति, बहुश्रुत भक्ति और प्रवचन भक्ति है।

आवश्यकापरिहाणि – **षण्णामावश्यकक्रियाणां यथाकालं प्रवर्तन-मावश्यकापरिहाणिः।**

छह आवश्यक क्रियाओं का यथा समय करना आवश्यका परिणामि है।

मार्गप्रभावना – **धर्म प्रकाशनं मार्गप्रभावना।**

धर्म का प्रकाश करना मार्गप्रभावना है।

प्रवचनवत्सलत्व – **धेनुवत्सधर्मणि स्नेहः प्रवचनवत्सलत्वम्।**

साधर्मियों पर स्नेह रखना प्रवचन वत्सलत्व है।

(सप्तमोऽध्यायः)

व्रत – **व्रतमभिसन्धिकृतोनियमः व्रतः।**
प्रतिज्ञा करके जो नियम लिया जाता है वह व्रत है।

अनुवीचीभाषण – **निरवद्यऽनुभाषणं अनुवीची भाषणं।**
अनुवीचीभाषण का अर्थ निर्दोष भाषण है।

शून्यागार – **गिरिगुहातरुकोटरादिष्वासः शून्यागारेषु।**
पर्वत की गुफा और वृक्ष का कोटर आदि शून्यागार है।

विमोचितावास – **परकीयेषु च विमोचितेष्वावासः।**
दूसरों द्वारा छोड़े हुए मकान आदि में रहना विमोचितावास है।

परोपरोधाकरण – **परेषामुपरोधाकरणम्।**
दूसरों को ठहरने से नहीं रोकना परोपरोधाकरण है।

भैक्षशुद्धि – **आचारशास्त्रमार्गेण भैक्षशुद्धिः।**
आचार शास्त्र में बतलायी हुई विधी के अनुसार भिक्षा लेना भैक्ष शुद्धि है।

अपाय – **अभ्युदयनिः श्रेयसार्थानां क्रियाणां विनाशकः प्रयोगोऽपायः।**
स्वर्ग और मोक्ष की प्रयोजक क्रियाओं का विनाश करने वाली प्रवृत्ति अपाय है।

अवद्य – **गर्हयम् अवद्यं।**
अवद्य का अर्थ गहर्य है।

मैत्री – **परेषां दुःखानुत्पत्त्यभिलषो मैत्री।**
दूसरो को दुःख न हो ऐसी अभिलाषा रखना मैत्री है।

प्रमोद	–	**वदनप्रसादादिभिव्यज्यमानान्तर्भवित रागः प्रमोदः।** मुख की प्रसन्नता आदि के द्वारा भीतर भक्ति का अनुराग का व्यक्त होना प्रमोद है।
कारुण्य	–	**दीनानुग्रहभावः कारुण्यम्।** दीनो पर दयाभाव रखना कारूण्य है।
माध्यस्थ	–	**रागद्वेष पूर्वक पक्षपाताभावो माध्यस्थम्।** रागद्वेष पूर्वक पक्षपात न करना माध्यस्थ्य है।
सत्त्व	–	**नानायोनिषु सीदन्तीति सत्त्वा जीवाः।** नाना योनियों में जो जन्म–मरण लेते रहते है, वह सत्त्व है।
गुणाधिक	–	**सम्यग्ज्ञानादिभीः प्रकृष्टा गुणाधिकाः।** जो सम्यग्ज्ञानादि गुणों में बढ़े–चढ़े है, वे गुणाधिक कहलाते हैं।
क्लिश्यमान	–	**असद्वेद्योदयापादितक्लेशाः क्लिश्यमानाः।** असाता वेदनीय के उदय से जो दुःखी वे क्लिश्यमान कहलाते हैं।
अविनय		**तत्त्वार्थश्रवणग्रहणाभ्यामसंपादित गुणा अविनेयाः।** जिनमें जीवादि पदार्थों को सुनने और ग्रहण करने का गुण नहीं है, वे अविनय कहलाते हैं।
प्रमत्त	–	**प्रमादः सकषायत्वं तद्वानात्मपरिणामः प्रमत्तः।** प्रमाद कषाय सहित अवस्था को कहते हैऔर इस प्रमाद से युक्त आत्मा का जो परिणाम है वह प्रमत्त कहलाता है।

मैथुन – **स्त्रीपुंसयोः परस्परस्पर्शनं प्रति इच्छा मिथुनम्। मिथुनस्य कर्म मैथुनम्।**

स्त्री और पुरुष के जो एक–दूसरे को स्पर्श करने की इच्छा होती है वह मिथुन कहलाता है और मिथुन का कार्य मैथुन कहा जाता है।

मूर्च्छा – **बाह्याभ्यंतरयुपधीनां संरक्षणार्जनसंस्कारा–दिलक्षणाव्यापृत्तिर्मूर्च्छाः।**

बाह्य और आभ्यन्तर उपधि का संरक्षण, अर्जन, और संस्कार आदि रूप व्यपार ही मूर्च्छा है।

शल्य – **शरीरानुप्रवेशि काण्डादिप्रहरणं शल्यमिव शल्यं।**

शरीर में काँटा आदि चुभ जाता है तो वह शल्य कहलाता है अर्थात् पीड़ा देने वाली वस्तु का नाम है–शल्य।

मायाशल्य – **माया निकृतिर्वञ्चना।**

माया, निकृति और वंचना अर्थात ठगने की वृत्ति यह माया शल्य है।

निदानशल्य – **विषयभोग आकांक्षा निदानं।**

भोगो की लालसा निदान शल्य है।

मिथ्याशल्य – **दर्शनमऽतत्त्व श्रद्धानम् मिथ्या।**

अतत्त्वों का श्रद्धान मिथ्यादर्शन शल्य है।

अगारी – **प्रतिश्रयार्थिभिः अंगयते इति अगारं वेश्म, तद्वानगारी।**

आश्रय चाहने वाले जिसे अंगीकार करते है, वह अगार है। अगार का अर्थ वेश्य अर्थात घर है। जिसके घर है वह अगारी है।

अनगार – **न विद्यते अगारमस्येत्यनगारः।**

जिसके घर नहीं है वह अनगार है।

अतिथि – **संयममविनाशयन्नततीत्यतिथि अथवा नास्य तिथिरस्तीत्यतिथिः।**

संयम का विनाश न हो इस विधी से जो चलता है वह अतिथि है या जिनके आने की कोई तिथि नहीं उसे अतिथि कहते हैं।

मरण – **आयुष इन्द्रियाणां बलानां च कारण-वशात्संक्षयो मरणम्।**

आयु, इन्द्रियीं और मन-वचन-काय इन तीन बलों का कारण विशेष के मिलने पर नाश होना मरण है।

सल्लेखना – **सम्यक्कायकषायलेखना सल्लेखना।**

अच्छे प्रकार से काय और कषाय का लेखन करना अर्थात कृष करना सल्लेखना है।

संस्तव – **भूताभूतगुणोद्भाववचनं संस्तवः।**

जो गुण है या जो गुण नहीं हैं इन दोनों का सद्भाव बतलाते हुए कथन करना संस्तव है।

विवाह – **कन्यादानं विवाहः।**

कन्या का ग्रहण करना विवाह है।

इत्वरी – **परपुरुषानेति गच्छतीत्येवंशीला इत्वरी।**

जिसका स्वभाव अन्य पुरुषों के पास आना-जाना है वह इत्वरी कहलाती है।

परिगृहीता – **एकपुरुषभर्तृका सा परिगृहीता।**

जिसका कोई एक पुरुष भर्ता है वह परिगृहीता कहलाती है।

अपरिगृहीता – **गणिकात्वेन पुंश्चलीत्वेन वा परपुरुष-गमनशीला अस्वामिका सा अपरिगृहिता।**

जो वेश्या या व्यभिचारिणी होने से दूसरे पुरुषों के पास जाती-आती रहती है और जिसका कोई पुरुष स्वामी नहीं है वह अपरिगृहीता कहलाती है।

अनङ्गक्रीडा – **अङ्गं प्रजननं योनिश्च, ततोऽन्यत्रक्रीडा अनङ्ग क्रीडा।**

अंग शब्द का अर्थ प्रजनन और योनि है इनके सिवा अन्यत्र क्रीड़ा करना अनंगक्रीडा है।

कामतीव्राभिनिवेशा – **कामस्य प्रवृद्धः परिणामः कामतीव्रा-भिनिवेशाः।**

काम विषयक बढ़ा हुआ परिणाम कामतीव्रा-भिनिवेश है।

क्षेत्र – **सस्याधिकरणम् क्षेत्रं।**

धान्य पैदा करने का आधारभूत स्थान क्षेत्र है।

वास्तु – **अगारम् वास्तु।**

मकान वास्तु है।

हिरण्यं – **रुप्यादिव्यवहारतन्त्रम् हिरण्यं।**

जिससे रुप्य आदि का व्यवहार होता है वह हिरण्य है।

धनं – **गवादि धनं।**

धन में गाय आदि लेते है।

धान्यं – **ब्रीह्यादि धान्यं।**

धान्य से ब्रीहि आदि लिये जाते हैं।

दासीदास – **भृत्यस्त्री पुंसवर्गः दासीदासं।**

नौकर स्त्री-पुरुष मिलकर दासी-दास कहलाते हैं।

कुप्य – **क्षौमकार्पा–सकौशेय चन्दनादि कुप्यं।**
रेशम, कपास और कोसा के वस्त्र तथा चन्दन आदि कुप्य कहलाते हैं।

प्रत्यवेक्षण – **जन्तवः सन्ति न सन्ति वेति चक्षुर्व्यापारः प्रत्यवेक्षणं।**
जीव है या नहीं है इस प्रकार आँख से देखना प्रत्यवेक्षण कहलाता है।

दुः पक्व – **असम्यक्पक्वो दुष्पक्वः।**
जो ठीक तरह से नहीं पका है वह दुःपक्व है।

अनुग्रह – **स्वपरोपकारोऽनुग्रहः।**
स्वयं अपना और दूसरे का उपकार करना अनुग्रह है।

विधि – **प्रतिग्रहादि क्रमोविधिः।**
प्रतिग्रह आदि करने का जो क्रम है वह विधि है।

हिंसा – **दशप्राणाः यथासंभवं वियोगकरणं हिंसाः।**
दस प्राणो का यथासम्भव वियोग करना हिंसा कही जाती है।

विधिविशेष – **प्रतिग्रहादिष्वादरानादरकृतोभेदः विधि विशेषः।**
प्रतिगृह आदि में आदर और अनादर होने से जो भेद होता है वह विधि विशेष है।

द्रव्यविशेष – **तपः स्वाध्याय परिवृद्धि हेतुत्वादिः द्रव्यविशेषः।**
जिससे तप और स्वाध्याय आदि की वृद्धि होती है वह द्रव्य विशेष है।

दातृ विशेष – **अनसूयाविषादादिः दातृविशेषः।**
अनसूया और विषाद आदि का न होना दाता की विशेषता है।

पात्र विशेष – **मोक्षकारण गुण संयोगः पात्र विशेषः।**

मोक्ष के कारणभूत गुणों से युक्त रहना पात्र की विशेषता है।

सामायिक – **समय एवं सामायिकं, समयः प्रयोजनमस्येति वा विगृह्य सामायिकम्।**

समय ही सामायिक है। समय अर्थात एक रूप हो जाना ही जिसका प्रयोजन है वह सामायिक है।

अनर्थदण्ड – **असत्युपकारे पापादानहेतुरनर्थदण्डः।**

उपकार न होकर जो प्रवृत्ति केवल पाप का कारण है वह अनर्थ दण्ड है।

प्रोषधोपवास – **प्रोषधशब्दः पर्वपर्यायवाची। प्रोषधे उपवासः प्रोषधोपवासः।**

प्रोषध का अर्थ पर्व है। प्रोषध के दिनों में जो उपवास किया जाता है उसे प्रोषधोपवास कहते हैं।

(अष्टोऽध्याय)

प्रमाद – **कुशलेष्वनादरः प्रमादः।**

अच्छे कार्यों के करने में आदर भाव का न होना प्रमाद है।

प्रकृति – **स्वभावः प्रकृति।**

प्रकृति का अर्थ स्वभाव है।

स्थिति – **तत्स्वभावादप्रच्युतिः स्थितिः।**

जिसका जो स्वभाव है उससे च्युत न होना स्थिति है।

अनुभव (अनुभाग) – **कर्मपुद्गलानां स्वगतसामर्थ्यविशेषोऽ–नुभवः।**

कर्म पुद्गलों का अलग–अलग स्वगत सामर्थ्यविशेष अनुभव है।

प्रदेश – **परमाणु परिच्छेदेनावधारणं प्रदेशः।**

परमाणुओं की जानकारी करके निश्चय करना प्रदेशबन्ध है।

वेदनीय – **वेदयति वेद्यत इति वा वेदनीयम्।**

जो वेदन कराता है या जिसके द्वारा वेदा जाता है वह वेदनीय कर्म है।

मोहनीय – **मोहयति मोहह्यतेऽनेनति वा मोहनीयम्।**

जो मोहित करता है अथवा जिसके द्वारा मोहा जाता है वह मोहनीय कर्म है।

आयु – **एत्यनेन नारकादिभवमित्यायुः।**

जिसके द्वारा नरक आदि भव को जाता है वह आयुकर्म है।

नाम – **आत्मानं नम्यते अनेन इति वा नाम।**

जो आत्मा को नमाता है या जिसके द्वारा आत्मा नमता है वह नाम कर्म है।

अन्तराय – **दातृदेयादिनामन्तरं मध्यमेतीत्यन्तरायः।**

जो दाता और देय आदि का अन्तर करता है अर्थात बीच में आता है वह अन्तराय कर्म है।

निद्रा – **मदखेदक्लमविनोदनार्थः स्वापो निद्रा।**

मद, खेद और परिश्रमजन्य थकावट को दूर करने के लिए नींद लेना निद्रा है।

निद्रा-निद्रा – **तस्या उपर्युपरि वृत्तिर्निद्रानिद्रा।**

इसकी उत्तरोत्तर प्रवृत्ति होना निद्रा-निद्रा है।

प्रचला – **शोक श्रममदादिप्रभवा आसीनस्यापि नेत्रगात्रविक्रियासूचिकाक्रियात्मानं प्रचलयति सा प्रचला।**

शोक, श्रम और मद आदि के कारण और जो बैठे हुए प्राणी के भी नेत्र, गात्र की विक्रियासूचक है, ऐसी जो क्रिया आत्मा को चलायमान करती है वह प्रचला है।

प्रचला-प्रचला – **सैव पुनः पुनरावर्तमाना प्रचलाप्रचला।**

उसकी (उपरोक्त की) पुनः-पुनः आवृत्ति होना प्रचला प्रचला है।

स्त्यानगृद्धि – **स्वप्ने यथा वीर्यविशेषाविर्भावः सा स्त्यानगृद्धिः।**

जिसके निमित्त से स्वप्न में वीर्य विशेष का आविर्भाव होता है वह स्त्यानगृद्धि है।

सद्वेद्य – **देवादिगतिषुशरीर-मानससुखप्राप्तिस्तत्स-द्वेद्यम्।**

देवादि गतियों में शरीर और मन सम्बंधी सुख की प्राप्ति होती है वह सद्वेद्य है।

हास्य – **यदुदयात् हास्याविर्भावः हास्यम्।**

जिसके उदय से हँसी आती है, वह हास्य है।

रति-अरति – **यदुदयात् देशादिष्वौत्सुक्यं सा रतिः। अरति तद्विपरीता।**

जिसके उदय से देश आदि में उत्सुकता होती है वह रति है। अरति इससे विपरीत है।

शोक – **यदुदयात् अच्छोचनं स शोकः।**

जिसके उदय से शोक होता है वह शोक है।

भय – **यदुदयात् उद्वेग तद्भयम्।**

जिसके उदय से उद्वेग होता है वह भय है।

जुगुप्सा – **यदुदयात् आत्मदोषसंवरणं परदोषाविष्करणं सा जुगुप्साः।**

जिसके उदय से आत्मा दोषो का संवरण और पर दोषों का आविष्करण होता है वह जुगुप्सा है।

स्त्रीवेद – **यदुदयात् स्त्रैणान्भावान्प्रतिपद्यते स स्त्रीवेदः।**

जिसके उदय से स्त्री सम्बंधी भावों को प्राप्त होता है वह स्त्रीवेद है।

पुंवेद – **यदुदयात् पौंस्नान्भावानास्कन्दति स पुं वेदः।**

जिसके उदय से पुरुष सम्बंधी भावों को प्राप्त होता है वह पुंवेद है।

नपुंसकवेद – **यदुदयात् नापुंसकान्भावानुपव्रजति स नपुंसकवेदः।**

जिसके उदय से नपुंसक सम्बन्धी भावों को प्राप्त होता है वह नपुंसक वेद है।

गति – **यदुदयात् आत्मा भवान्तरं गच्छति सा गतिः।**

जिसके उदय से आत्मा भवान्तर को जाता है वह गति है।

जाति – **नरकादिगतिष्वव्यभिचारिणा सादृश्येनैकीकृतोऽर्थात्मा जातिः।**

नरकादि गतियों में जिस अव्यभिचारी सादृश्य से एकपने रूप अर्थ की प्राप्ति होती है वह जाति है।

निर्माण – **यन्निमित्ताद् परिनिष्पत्तिस्तन्निर्माणम्।**

जिसके निमित से परिनिष्पत्ति अर्थात रचना होती है वह निर्माण (नामकर्म) है।

बन्धन – **पुद्गलनामन्योन्यप्रदेशसंश्लेषणं यतो भवति तद्बन्धननाम।**

पुद्गलों का अन्योन्य प्रदेश संश्लेष जिसके निमित्त से होता है वह बन्धन नामकर्म है।

संस्थान – **औदारिकादिशरीराकृतिनिर्वृत्तिर्भवति तत्संस्थाननाम।**

औदारिक आदि शरीरों की आकृति बनती है वह संस्थान नाम कर्म है।

संहनन	–	**अस्थिबंधन विशेषोभवति तत्संहनननाम।** जिसके उदय से अस्थिंयो का बंधन विशेष होता है वह संहनन नाम कर्म है।
आनुपूर्वी	–	**पूर्वशरीराकाराविनाशो यस्योदयाद्भवति तदानुपूर्व्यनाम।** पूर्व शरीर के आकार का विनाश जिसके उदय से नहीं होता वह आनुपूर्व्य नामकर्म है।
अगुरुलघु	–	**पिण्डवद् गुरुत्वान्नाधः पतति न चार्कतूल-वल्लधुत्वादूर्ध्वं गच्छति तदगुरुलघुनाम।** लोहे के पिण्ड के समान गुरु होने से न नीचे गिरता है और न अर्कतूल के समान लघु होने से ऊपर जाता है वह अगुरुलघु नामकर्म है।
उपघात	–	**स्वयं कृतोद्बन्धनमरुप्रपतनादिनिमित्त उपघातो भवति तदुपघातनाम।** स्वयंकृत उद्बन्धन और मरूस्थल में गिरना आदि निमित्तक उपघात होता है, वह उपघात नामकर्म है।
परघात	–	**परशस्त्राघातस्तत्परघातनाम।** परशस्त्रादि का निमित्त पाकर व्याघात होता है वह परघात नामकर्म है।
आतप	–	**निवृत्तमातपनं तदातपनाम।** शरीर में आतप की रचना होती है वह आतप नाम कर्म है।
उद्योत	–	**उद्योतनं तदुद्योतनाम।** शरीर में उद्योत होता है वह उद्योत नामकर्म है।
उच्छ्वास	–	**यद्धेतुरुच्छ्वासस्तदुच्छ्वासनाम।** जिसके निमित्त से उच्छ्वास होता है वह उच्छ्वास नाम कर्म है।

विहायोगति – **विहाय आकाशम्। तत्र गतिनिर्वर्तकं तद्वि-हायोगतिनाम।**

विहाय का अर्थ आकाश है। उसमें गति का निर्वर्तक कर्म विहायोगति नामकर्म है।

प्रत्येकशरीर – **शरीरमेकात्मोपभोगकारणं तत्प्रत्येकशरीरं।**

जो शरीर जिसके निमित्त से एक आत्मा के उपभोग का कारण होता है वह प्रत्येक शरीर है।

साधारणशरीर – **बहुनामात्मनामुपभोगहेतुत्वेन साधारणं शरीरं।**

बहुत आत्माओं के उपभोग का हेतुरूप जिसके निमित्त से होता है, वह साधारण शरीर है।

त्रस-स्थावर – **द्वीन्द्रियादिषु जन्म तत्त्रस। एकेन्द्रियेषु प्रादुर्भावस्तत्स्थावरः।**

द्विन्दियादिक में जन्म होता है, वह त्रस है। ऐन्द्रियों में उत्पत्ति होती है वह स्थावर नाम कर्म है।

सुभग-दुर्भग – **अन्यप्रीति प्रभवस्तत्सुभगः। अप्रीतिक-रस्तद् दुर्भगः।**

अन्य जन प्रीतिकर अवस्था सुभग तथा अप्रीतिकर अवस्था दुर्भग नामकर्म है।

सुस्वर-दुःस्वर – **मनोज्ञस्वरनिर्वर्तनं सुस्वरः। तद्विपरीतम् दुःस्वरः।**

मनोज्ञ स्वर की रचना होना सुस्वर तथा इसके विपरित दुःस्वर नामकर्म है।

शुभऽशुभ – **रमणीयत्वं तच्छुभः। तद्विपरीतमशुभनाम।**

रमणीय होना शुभ तथा इसके विपरित अशुभ नामकर्म है।

सूक्ष्म-बादर – **सूक्ष्मशरीरनिर्वर्तकं सूक्ष्मः। अन्यबाधाकर-शरीरकारणं बादरः।**

सूक्ष्म शरीर का निर्वर्तक कर्म सूक्ष्म एवं अन्य–अन्य बाधाकर शरीर का कारण बादर नामकर्म है।

पर्याप्ति – **आहारादिपर्याप्तिनिवृत्तिः तत्पर्याप्तिः।**
आहार आदि पर्याप्तियों की रचना होना पर्याप्ति नामकर्म है।

अपर्याप्ति – **षड़्विधपर्याप्त्यभावहेतुरपर्याप्तिः।**
छह प्रकार की पर्याप्तियों के अभाव का हेतु अपर्याप्ति नामकर्म है।

स्थिरऽस्थिर – **स्थिरभावस्य निर्वर्तकं स्थिरः। तद्विपरीतमस्थिरः।**
स्थिर भाव का निर्वर्तक कर्म स्थिर तथा इससे विपरित अस्थिर नामकर्म है।

आदेयऽनादेय – **प्रभोपेतशरीरकारणमादेय। निष्प्रभशरीरकारणमनादेय।**
प्रभायुक्त शरीर का कारण आदेय और निष्प्रभ शरीर का कारण अनादेय है।

यशऽयशकीर्ति – **पुण्यगुणख्यापनकारणं यशः कीर्ति। तत्प्रत्यनीक फलमयशः कीर्ति।**
पुण्य गुणों की प्रसिद्धि का कारण यशः कीर्ति एवं इससे विपरित फल वाला अयशःकीर्ति नामकर्म है।

तीर्थंङ्कर – **आर्हन्त्यकारणं तीर्थकरत्वनाम।**
आर्हन्त्य का कारण तीर्थंकर नामकर्म है।

उच्चगोत्र – **लोकपूजितेषु कुलेषु जन्म तदुच्चैर्गोत्रम्।**
लोकपूजित कुलों में जन्म उच्च गोत्र है।

नीचगोत्र – **गर्हितेषु कुलेषु जन्म तन्नीचैर्गोत्रम्।**
गर्हित कुलों में जन्म नीच गोत्र है।

दानान्तराय – **दातुकामोऽपि न प्रयच्छति दानान्तराय।**

देने की इच्छा करता हुआ भी नहीं देना दानान्तराय है।

लाभान्तराय – **लब्धुकामोऽपि न लभते लाभान्तराय।**

प्राप्त करने की इच्छा रखता हुआ भी नहीं प्राप्त करना लाभान्तराय है।

भोगान्तराय – **भोक्तुमिच्छन्नपि न भुङ्क्ते भोगान्तराय।**

भोगने की इच्छा करता हुआ भी नहीं भोग सकता भोगान्तारय है।

उपभोगान्तराय – **उपभोक्तुमभिवाञ्छन्नपि नोपभुङ्क्ते उपभोगान्तराय।**

उपभोग करने की इच्छा करता हुआ भी उपभोग नहीं कर सकना उपभोगान्तराय है।

वीर्यान्तराय – **उत्सहितुकामोपि नोत्सहते वीर्यान्तराय।**

उत्साहित होने की इच्छा रखते हुये भी उत्साहित नहीं होना वीर्यान्तराय है।

विपाक **विशिष्टो नानाविधो वा पाको विपाकः।(या) कषायतीव्रमन्दादिभावास्त्रवविशेषाद्विशिष्टः पाको विपाकः।**

विशिष्ट या नाना प्रकार के पाक का नाम विपाक है, अथवा कषायों के तीव्र, मन्द आदिरूप भावास्त्रव के भेद से विशिष्ट पाक का होना विपाक है।

निर्जरा – **पूर्वस्थितिक्षयादवस्थानाभावात्कर्मणो निवृत्तिर्निर्जराः।**

पूर्व स्थिति का नाश हो जाने से स्थिति न रहने के कारण कर्म की निवृत्ति का होना निर्जरा है।

भावसंवर – **संसारनिमित्तक्रियानिवृत्तिर्भावसंवरः।**

संसार की निमित्तभूत क्रिया की निवृत्ति होना भावसंवर है।

द्रव्यसंवर – **कर्मपुदगलादानविच्छदो द्रव्यसंवरः।**

कर्म–पुद्गलों के ग्रहण का विच्छेद होना द्रव्यसंवर है।

गुप्ति – **संसारकारणादात्मनो गोपनं भवति सा गुप्तिः।**

संसार के कारणों से आत्मा का गोपन अर्थात रक्षा होती है वह गुप्ति है।

समिति – **प्राणिपीड़ापरिहारार्थं सम्यगयनं समितिः।**

प्राणि पीड़ा का परिहार करने के लिए भले प्रकार आना–जाना, उठाना–धरना, ग्रहण करना व मोचन करना समिति है।

धर्म – **इष्टे स्थाने धत्ते इति धर्मः।**

जो इष्ट स्थान में धरता है वह धर्म है।

अनुप्रेक्षा – **शरीरादीनां स्वभावानुचिन्तनमनुप्रेक्षा।**

शरीरादि के स्वभाव का बार–बार चिन्तन करना अनुप्रेक्षा है।

परिषह – **कर्मनिजरार्थं सहनं परिषहः।**

कर्मों की निर्जरा करने के लिए सहना परिषह है।

निग्रह – **स्वेच्छा प्रवृत्ति निवर्तनं निग्रहः।**

स्वच्छन्द प्रवृत्ति का बन्द होना निग्रह है।

क्षमा – **कालुष्यानुत्पत्तिः क्षमाः।**

कलुषता का उत्पन्न न होना क्षमा है।

मार्दव – **माननिर्हरणम् मार्दवं।**

मार्दव का अर्थ है मान का नाश करना।

आर्जव – **योगस्यावक्रता आर्जवम्।**

योगों का वक्र न होना आर्जव है।

शौच – **प्रकर्षप्राप्त लोभान्निवृत्तिः शौचम्।**

प्रकर्ष प्राप्त लोभ का त्याग करना शौच है।

सत्य – **सत्सु प्रशस्तेषु जनेषु साधु वचनं सत्यं।**

अच्छे पुरुषों के साथ साधु वचन बोलना सत्य है।

संयम – **समितिषु वर्तमानस्य प्राणीन्द्रियपरिहा-रस्संयमः।**

समितियों में प्रवृत्ति करने वाले मुनि के जो प्राणियों और इन्द्रियों का परिहार होता है वह संयम है।

तप – **कर्मक्षयार्थं तप्यत इति तपः।**

कर्म क्षय के लिए जो तपा जाता है वह तप है।

त्याग – **संयतस्य योग्यं ज्ञानादिदानं त्यागः।**

संयत के योग्य ज्ञानादि का दान करना त्याग है।

आकिंचन्य – **शरीरादिषु संस्कारापोहाय ममेदमित्यभि-सन्धिनिवृत्तिः आकिंचन्यम्।**

शरीरादिक, में भी संस्कार का त्याग करने के लिए 'यह मेरा है' इस प्रकार के अभिप्राय का त्याग करना आकिंचन्य है।

ब्रह्मचर्य – **स्वतन्त्रवृत्तिनिवृत्यर्थो वा गुरुकुलवासो ब्रह्मचर्यम्।**

स्वतन्त्र वृत्ति का त्याग करने के लिए गुरुकुल में निवास करना ब्रह्मचर्य है।

संसार – **कर्मविपाकवशादात्मनो भवान्तरावाप्तिः संसारः।**

कर्म के विपाक के वश से आत्मा को भावान्तर की प्राप्ति होना संसार है।

सत्कार	–	**पूजाप्रशंसात्मकः सत्कारः।** सत्कार का अर्थ पूजा–प्रशंसा है।
छेदोपस्थापना	–	**प्रमादकृतानर्थप्रबन्धविलोपे सम्यक्–प्रतिक्रिया छेदोपस्थापना विकल्प–निवृत्तिर्वा।** प्रमादकृत अनर्थ प्रबन्ध का सर्वथा त्याग करने पर जो भले प्रकार पुनः ब्रतों का गृहण होता हैं वह छेदोपस्थापना चारित्र हैं।
परिहारविशुद्धि	–	**परिहरणं परिहारः प्राणिवधान्निवृत्तिः। तेन विशिष्टा शुद्धिर्यस्मिंस्तत्परिहार विशुद्धि चारित्रम्।** प्राणिवध सो निवृत्ति को परिहार कहते हैं इससे युक्त शुद्धि जिस चारित्र में होती हैं वह परिहार विशुद्धि चारित्र हैं।
सूक्ष्मसांपराय	–	**अतिसूक्ष्मकषायत्वात्सूक्ष्मसांपरायचारित्रम्।** जिस चारित्र में कषाय अतिसुक्ष्म हो जाता हैं वह सुक्ष्म साम्पराय चारित्र हैं।
अथाख्यात	–	**आत्मस्वभावास्थापेक्षालक्षणं अथाख्यात–चारित्रम्।** आत्मा का जैसा स्वभाव हैं उस अवस्थास्वरूप अपेक्षा लक्षण जो चारित्र होता हैं वह अथाख्यात चारित्र कहा जाता हैं।
बाह्यतप	–	**बाह्यद्रव्यापेक्षत्वात्परप्रत्यक्षत्वाच्च बाह्यतप।** बाह्य–द्रव्य के आलम्बन से होता हैं और दूसरों के देखने में आता हैं इसलिए इसे बाह्यतप कहते हैं।
आभ्यन्तर तप	–	**मनोनियमन अर्थत्वात्।** मन का नियमन करने वाला होने से इसे आभ्यान्तर तप कहा जाता हैं।

प्रायश्चित तप	– **प्रमाददोष परिहारः प्रायश्चित्तम्।** प्रमाद जन्य दोष का परिहार करना प्रायश्चित तप है।
विनय तप	– **पूज्येष्वादरो विनयः।** पूज्य पुरूषों का आदर करना विनय तप हैं।
वैयावृत्य तप	– **कायचेष्टाया द्रव्यान्तरेण चोपासनं वैयावृष्यम्।** शरीर की चेष्टा या दूसरे द्रव्य द्वारा उपासना करना वैयावृत्य तप हैं।
स्वाध्याय तप	– **ज्ञानभावनालस्यत्यागः स्वाध्यायः।** आलस्य त्यागकर ज्ञान की आराधना करना स्वाध्याय तप हैं।
ध्यान तप	– **चित्तविक्षेपत्यागो ध्यानम्।** चित्त के विक्षेप का त्याग करना ध्यान तप हैं।
व्युत्सर्ग तप	– **आत्मात्मीयसंकल्पत्यागो व्युत्सर्गः।** अहंकार और ममकार रूप संकल्प का त्याग करना व्युतसर्ग तप हैं।
आलोचना	– **गुरवे प्रमादनिवेदनं दशदोषविवर्जितं आलोचनम्।** गुरु के समक्ष दश दोषों को टालकर अपने प्रमाद का निवेदन करना आलोचना हैं।
प्रतिक्रमण	– **मिथ्यादुष्कृताभिधानादभिव्यक्तप्रतिक्रियं प्रतिक्रमणम्।** मेरा दोष मिथ्या हो गुरू से ऐसा निवेदन करके अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना प्रतिक्रमण हैं।
विवेक	– **संसक्तान्नापानोपकरणादि विभजनं विवेकः।** संसक्त हुए अन्न, पान और उपकरण आदि का विभाग करना विवेक प्रायश्चित हैं।

व्युत्सर्ग – **कार्योत्सर्गादिकरणं व्युत्सर्गः।**

कायोत्सर्ग आदि करना व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त हैं।

छेद – **दिवस पक्षमासादिना प्रव्रज्याहापनं छेदः।**

दिवस, पक्ष और महीना आदि की प्रव्रज्या का छेद करना छेद नाम का प्रायश्चित हैं।

परिहार – **पक्षमासादिविभागेन दूरतः परिवर्जनं परिहारः।**

पक्ष, महीना आदि विभाग से संघ से दूर रखकर त्याग करना परिहार प्रायश्चित हैं।

उपस्थापना – **पुनर्दीक्षाप्रापणमुपस्थापना।**

पुनः दीक्षा का प्राप्त करना उपस्थापना हैं।

आचार्य – **आचरन्ति तस्माद् व्रतानीत्याचार्यः।**

जिसके निमित्त से व्रतों का आचरण करते है वह आचार्य कहलाता हैं।

उपाध्याय – **मोक्षार्थं शास्त्रमुपेत्य तस्मादधीयत उपाध्यायः।**

मोक्ष के लिए पास जाकर जिससे शास्त्र पढ़ते है वह उपाध्याय कहलाता हैं।

तपस्वी – **महोपवासाद्यनुष्ठायी तपस्वी।**

महोपवास आदि का अनुष्ठान करने वाला तपस्वी कहलाता हैं।

शैक्ष – **शिक्षाशीलः शैक्षः।**

शिक्षाशील शैल कहलाता हैं।

ग्लान – **रुजादिक्लिष्टशरीरो ग्लानः।**

रोग आदि से क्लान्त शरीर वाला ग्लान कहलाता हैं।

गण – **स्थविरसंततिः गणः।**

स्थविरों की सन्तति को गण कहते हैं।

कुल	– **दीक्षकाचार्यशिष्यसंस्त्यायः कुलम्।** दीक्षाकाचार्य के शिष्य समुदाय तो कुल कहते हैं।
संघ	– **चातुर्वर्ण श्रमणनिवहः संघः।** चार वर्ण के श्रमणों के समुदाय को संघ कहते हैं।
साधु	– **लोकसंमतः साधुः।** चिरकाल से प्रव्रजित को साधु कहते हैं।
मनोज्ञ	– **दीक्षाभिमुखः मनोज्ञः।** लोकसम्मत साधु को मनोज्ञ कहते हैं।
वाचाना	– **निरवद्यग्रन्थार्थोभयप्रदानं वाचना।** ग्रन्थ, अर्थ और दोनों का निर्दोष प्रदान करना वाचना हैं।
पृच्छना	– **संशयच्छेदाय निश्चितबलाधानाय वा परानुयोगः प्रच्छना।** संशय का उच्छेद करने के लिए अथवा निश्चित बल को पुष्ट करने के लिए प्रश्न करना प्रच्छना हैं।
अनुप्रेक्षा	– **अधिगतार्थस्य मनसाभ्यासोऽनुप्रेक्षा।** जाने हुए अर्थ का मन में अभ्यास करना अनुप्रेक्षा है।
आम्नाय	– **घोषशुद्धं परिवर्तनमाम्नायः।** उच्चारण की शुद्धिपूर्वक पाठ को पुनः–पुनः दुहराना आम्नाय हैं।
धर्मोपदेश	– **धर्मकथाद्यनुष्ठानं धर्मोपदेशः।** धर्मकथा आदि का अनुष्ठान करना धर्मोपदेश हैं।
आर्त्तध्यान	– **ऋतं दुःखम्, अर्दनमर्तिर्वा, तत्र भवमार्तम्।** ऋत का अर्थ दुःख है, अर्ति का भी दुःख या पीड़ा पहुँचाना हैं इसमें जो होता हैं वह आर्त हैं।

रौद्र ध्यान – **रुद्रः क्रूराशयस्तस्य कर्म तत्र भवं वा रौद्रम।**
रूद्र का अर्थ क्रूर आशय है इसका कर्म या इसमें होने वाला रौद्र हैं।

धर्मध्यान – **धर्मादनपेतं धर्म्यम्।**
जो धर्म से युक्त होता हैं वह धर्म्य हैं

शुक्लध्यान – **शुचिगुणयोगाच्छुक्लम्।**
जिसमें शुचि गुण का सम्बन्ध है वह शुक्ल हैं।

विचय – **विचयनं विचयो विवेको विचारणेत्यर्थः।**
विचयन करना विचय है विचय, विवेक और विचारणा ये पर्याय नाम हैं।

वितर्क – **विशेषेण तर्कणमूहनं वितर्कः।**
विशेष रूप से, तर्कणा करना अर्थात् ऊहा करना वितर्क हैं।

अर्थ संक्रान्ति – **द्रव्यं विहाय पर्यायमुपैति पर्यायं त्यक्त्वा द्रव्यं इति अर्थ संक्रान्तिः।**
द्रव्य को छोड़कर पर्याय को प्राप्त होता हैं और पर्याय को छोड़ द्रव्य को प्राप्त होता है यह अर्थ संक्रान्ति है।

व्यञ्जन संक्रान्ति – **एकं श्रुतवचनमुपादाय वचनान्तरमालम्बते तदपि विहायान्यदिति व्यञ्जनसंक्रान्तिः।**
एक श्रुतवचन का आलम्बन लेकर दूसरे वचन का आलम्बन लेता है और उसे भी त्यागरकर अन्य वचन का आलम्बन लेता हैं यह व्यञ्जन संक्रान्ति हैं।

योग संक्रान्ति – **काययोगं त्यक्त्वा योगान्तरं गृह्णाति योगान्तरं च त्यक्त्वा काययोगमिति योगसंक्रान्तिः।**
काय योग को छोड़कर दूसरे योक को स्वीकार करता हैं और दूसरे योग को छोड़कर काय योग को स्वीकार करता हैं यह योग संक्रान्ति हैं।

पुलाक	– **उत्तरगुणभावनापेतमनसो व्रतेष्वपि क्वचित्क-दाचित्परिपूर्णतामपरिप्राप्नुवन्तो पुलाकः।** जिनका मन उत्तर गुणों की भावना से रहित हैं जो कहीं पर और कदाचित व्रतों में भी परिपूर्णता को नहीं प्राप्त होतें हैं वे पुलाक हैं।
बकुश	– **अखण्ड़तव्रताः शरीरोपकरणविभूषानु-वर्तिनोऽविविक्तपरिच्छदामोहशबलयुक्ता बकुशाः।** व्रतों का अखण्ड रूप से पालन करते है शरीर और उपकरणों की शोभा वढ़ाने में लगे रहते है परिवार से धिरे रहते है ओर विविध प्रकार के मोंह से युक्त हे वे बकुश कहलाते हैं ।
प्रतिसेवनाकुशील	– **अविविक्त परिग्रहाः परिपूर्णोभयाः कथंचि-दुत्तरगुण विरोधिनः प्रतिसेवना कुशीलाः।** जो परिग्रह से घिरे रहते हैं जो मूल और उत्तर गुणों में परिपूर्ण है लेकिन कभी-कभी उत्तर गुणों की विराधना करते है वे प्रतिसेवना कुशील कहलाते हैं।
कषायकुशील	– **वशीकृतान्यकषायोदयाः संज्वलनमात्र तन्त्राः कषायकुशीलाः।** जिन्होंने अन्य कषायों के उदय को जीत लिया है और जो केवल संज्वलन कषाय के अधीन है वे कषाय कुशील कहलाते हैं।
निर्ग्रन्था	– **उदकदण्डराजिवदनभिव्यक्तोदय कर्माणः उर्ध्वं मुहूर्तादुद्भिद्यमानकेवलज्ञानदर्शनभाजो निर्ग्रन्थाः।** जिस प्रकार जल में लकड़ी से की गयी रेखा अप्रकट रहती हैं उसी प्रकार जिसके कर्मों का उदय अप्रकट

हो और जो अन्तर्मुहूर्त के बाद प्रकट होने वाले केवलज्ञान और केवलदर्शन को प्राप्त करते हैं वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

स्नातक – **प्रक्षीणघातिकर्माणः केवलिनो द्विविधाः स्नातकाः।**

जिन्होनें चार घातिया कर्मों का नाथ कर दिया हैं ऐसे दोनों प्रकार के केवली स्नातक कहलाते हैं।

(दशमोऽध्यायः)

प्रत्येक बुद्ध – **स्वशक्तिनिमित्तज्ञानभेदात्।**

अपनी शक्ति रूप निमित्त से होने वाले ज्ञान के भेद से प्रत्येक बुद्ध होते हैं।

बोधित बुद्ध – **परोपदेश निमित्तज्ञानभेदात्।**

परोपदेश रूप निमित्त से होने वाले ज्ञान के भेद से बोधित बुद्ध होते हैं।

समिति – **सम्यगयनानि समितयः। सम्यक्प्रवृत्तयः समितयः।**

सम्यक् अयन अर्थात् प्रवृत्ति को समिति कहते हैं।

ईर्यासमिति – **सम्यगवलोकनं समाहितचित्तस्य प्रयत्नेन गमनागमनादिकम्। (या) संयतस्य जन्तून परिहरतो यद्गमनं सः ईर्यासमितिः।**

सम्यक् प्रकार से अवलोकन करना, एकाग्रमना होते प्रत्यनपूर्वक गमन–आगमन आदि करना ईर्यासमिति है अथवा साधु का जीवों की विराधना न करते हुए जो गमन है वह ईर्या समिति हैं।

भाषा समिति – **श्रुतधर्माविरोधेनपूर्वापर विवेक सहित मनिष्ठुरादिवचनम् भाषासमितिः।**

शास्त्र और धर्म से अविरुद्ध पूर्वापर विवेक सहित निष्ठुर आदि वचन न बोलना भाषा समिति है।

एषणासमिति – **लोकजुगुप्सादिपरिहीनविशुद्ध पिण्ड–ग्रहणम् एषणासमितिः।**

लोक निन्दा आदि से रहित विशुद्ध आहार का गृहण करना एषणा समिति हैं।

निक्षेपादान समिति – **चक्षुः पिच्छकप्रतिलेखन पूर्वक सयत्नग्रहण–निक्षेपादिः निक्षेपादानसमितिः।**

नेत्र से देखकर और पिच्छिका से परिमार्जित करके यत्नपूर्वक किसी वस्तु को उठाना और रखना निक्षेपादान समिति हैं।

प्रतिष्ठापन समिति – **जन्तुविवर्जितप्रदेशे सम्यगवलोक्यमला–द्युत्सर्गः प्रतिष्ठापनासमितिः।**

जन्तु से रहित प्रदेश में सम्यक् प्रकार से देखकर मलमूत्र आदि का त्याग करना प्रतिष्ठापन समिति कहलाती हैं।

जिन – **कर्मारातिन् जयन्तीति जिनः।**
कर्म शत्रु को जो जीतते है वे जिन कहलाते हैं।

आवश्यक – **अवश्यकर्तव्यानि आवश्यकः।**
अवश्य करने योग्य कार्य को आवश्यक कहते हैं।

लोच – **हस्ताभ्यां मस्तककूर्चगतवालोत्पाटः लोचः।**
हाथों से मस्तक और मूँछ के बालों को उखाड़ना लोच कहलाता है।

अस्नान – **जलसेकोद्वर्तनाभ्यंगादिवर्जनम् अस्नानं।**
जल का सिंचन, उबटन, अभ्यंग स्नान (तेलमर्दन) आदि का त्याग करना अस्नान व्रत है।

क्षितिशयन – **पृथिव्यां तृणफलकपाषाणादौ शयनं क्षितिशयनं।**
पृथ्वी पर एवं तृण, फलक (पाटे), पाषाण–शिला आदि पर सोना क्षितिशयन गुण है।

अदंतघंसण – **ताम्बूलदन्तकाष्ठादिवर्जनम् अदंतघर्षणं।**
तांबूल, दन्तकाष्ठ (दातोन) आदि का त्याग करना, अदन्तघर्षण है।

स्थितिभोजन – **स्थितस्योर्ध्वतनोः चतुरंगुलपादान्तरस्य–भोजनं स्थितिभोजनं।**
पैरो के चार अंगुल अन्तराल से खड़े होकर भोजन करना स्थिति भोजन है।

एकभुक्त – **एकवेलाहारग्रहणम् एकभक्तं।**
एक वेला में आहार ग्रहण करना एकभुक्त मूलगुण है।

मूलगुण	–	**उत्तरगुणाधारभूताः मूलगुणाः।** उत्तरगुणों के लिए जो आधारभूत है वे ही मूलगुण कहलाते हैं।
स्थाण्डिलशायी	–	**स्वपनं क्षितिशयनं स्थाण्ड़िल्यशायित्वम्।** खुले स्थान पर सोना स्थाण्ऽिलशायी है।
परीक्षा	–	**प्रमाणैरर्थावधारणां परीक्षाः।** प्रमाणों के द्वारा अर्थ का निर्णय करना परीक्षा है।
जीव	–	**द्रव्यप्राणभावप्राणधारणसमर्थाः जीवाः।** जो द्रव्य प्राण और भाव प्राण को धारण करने में समर्थ है वे जीव कहलाते हैं।
परिग्रह	–	**समन्तत आदानरूपा मूर्च्छा परिग्रहाः।** सब तरफ से ग्रहण करने रूप मूर्च्छा परिणाम को परिग्रह कहते हैं।
आयु	–	**देहधारणं आयुः।** शरीर के धारण को आयु कहते हैं।
योनि	–	**जीवोत्पत्तिस्थानानि योनयः।** जीव के उत्पत्ति को स्थान को योनि कहते है।
प्रासुक	–	**प्रगता असवो जीवा यस्मिन्नसो प्रासुकः।** निकल गये हैं प्राणि जिसमें से उसे प्रासुक कहते हैं।
पैशून्य	–	**निर्दोषस्य दोषोद्भावनम् पैशून्यं।** निर्दोष के दोषों का उद्‌भावन करना, निर्दोष को दोष लगाना पैशून्य है।
कर्कश	–	**श्रवणनिष्ठुरं कामयुद्धार्थ प्रवर्तकं वचनम् कर्कशः।** कान के लिए कठोर, काम और युद्ध के प्रवर्तक वचन कर्कश हैं।

परनिंदा – **परेषां निन्दा जुगुप्सा परनिंदा।**

पर के सच्चे अथवा झूठे दोषों को प्रकट करने की इच्छा का होना परनिन्दा है।

आत्मप्रशंसा – **स्वगुणाविष्करणाभिप्रायः आत्मप्रशंसाः।**

अपने गुणों को प्रकट करने का अभिप्राय रखना आत्मप्रशंसा है।

हास्य – **हास्यकर्मोदयवशादधर्मार्थ हर्षः हास्य।**

हास्य कर्म के उदय से अधर्म के लिए हर्ष होना हास्य है।

अचित्तस्थान – **हरितकायत्रसकायादिविविक्ते दग्धसमे-स्थण्डिले अचित्तेः।**

हरितकाय और त्रसकाय आदि से रहित जले हुए अथवा जले हुए के समान ऐसे स्थण्ऽल-खुले मैदान को अचित्त स्थान कहते है।

उपयोग – **आत्मनः परिणामः उपयोगः।**

आत्मा का परिणाम उपयोग है।

इन्द्रिय – **मतिज्ञानावरणक्षयोपशमशक्त्यः इन्द्रियः।**

मति ज्ञानावरण के क्षयोपशम की शक्ति का नाम इन्द्रिय है।

लब्धि – **ज्ञानावरणकर्मक्षयोपशम विशेषः लब्धिः।**

ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम विशेष लब्धि है।

मुनि – **मुनि इन्द्रियसंयमनायकः। चारित्रा-भिमानिनो मुनयः।**

इन्द्रिय संयम के स्वामी मुनि है।

वासना – **अन्यद्रव्यकृतसंस्कारः वासनाः।**

अन्य द्रव्य के द्वारा किये गये संस्कार को वासना कहते है।

प्रासुक	– **जीव सम्मूर्च्छनादि रहितः प्रासुकः।** सम्मूर्च्छन आदि जीवों से रहित को प्रासुक कहते हैं।
आहार	– **आहारो बुभुक्षाद्युपशामकं द्रव्यं।** भूख आदि को शमन करने वाले द्रव्य का नाम आहार है।
समता	– **समस्य भाव समता। चारित्रानुविद्धसम-परिणामः समताः।** समभाव को समता कहते है। चारित्र से समन्वित समभाव का होना समता है।
वंदना	– **एकतीर्थकृत्प्रतिबद्धा वंदनाः।** एक तीर्थंकर से सम्बन्धित वन्दना आवश्यक है।
प्रतिक्रमण	– **स्वकृतादशुभयोगात्प्रतिनिवृत्तिः प्रतिक्रमणः।** अपने द्वारा किए हुए अशुभ योग से प्रतिनिवृत्त होना (छूटना) प्रतिक्रमण है।
प्रत्याख्यान	– **अयोग्यद्रव्यपरिहारः प्रत्याख्यानं।** अयोग्य द्रव्य का परिहार (त्याग) करना प्रत्याख्यान है।
कायोत्सर्ग	– **देहे ममत्व निरासः जिन गुणचिन्तायुक्तः कायोत्सर्गः।** शरीर से ममत्व का त्याग करना और जिनेन्द्र देव के गुणों का चिन्तवन करना कायोत्सर्ग है।
निन्दा	– **आत्मदोषाविष्करणं निन्दाः।** अपने दोषों को प्रकट करना निन्दा है।
गर्हा	– **आलोचनापूर्वकं दोषाविष्करणं गर्हणं।** आलोचना पूर्वक दोषों का कहना गर्हा है।

प्रतिक्रमण – **अशुभपरिणामपूर्वककृतदोष परित्यागः प्रतिक्रमणं।**

अशुभ परिणामपूर्वक किये गये दोषों का परित्याग करना प्रतिक्रमण है।

प्रत्याख्यान – **अयोग्यग्रहणपरित्यागः प्रत्याख्यानं।**

अयोग्य के ग्रहण का परित्याग करना प्रत्याख्यान है।

प्रतिक्रमण – **अतीतकाल दोष निर्हरणं प्रतिक्रमणम्।**

अतितकाल के दोषों का निराकरण करना प्रतिक्रमण है।

वृत्तिपरिसंख्यान – **आहारसंज्ञाया जयः गृहादिगणनान्यायेन वृत्तिपरिसंख्यानं।**

गृह पात्र आदि नियम विशेष करके आहार संज्ञा को जीतना वृत्ति परिसंख्यान तप है।

रसपरित्याग – **मनोवाक्कायक्रियाभीरसगोचरगार्द्धत्यजनं रसपरित्यागः।**

मन–वचन–काय से रस विषयक गृद्धि का त्याग करना रसपरित्याग तप है।

कायक्लेश – **कायेसुखाभिलाषत्यजनं कायक्लेशः।**

काय के सुख की अभिलाषा का त्याग कायक्लेश है।

विविक्तशयनासन – **चित्तव्याकुलतापराजयो विविक्त–शयनासनम्।**

चित्त की व्याकुलता को जीतना विविक्तशयनासन तप है।

आलोचना – **स्वकृतापराधगुहनत्यजनं आलोचनाः।**

स्वयं किये हुए अपराधन नहीं छिपाना आलोचना है।

छेद – **असंयमजुगुप्सार्थं प्रव्रज्याहापनं छेदः।**

असंयम से ग्लानि उत्पन्न होने पर दीक्षा को कम कर देना छेद है।

परिहार – **कालप्रमाणेन चतुर्वर्ण्यश्रमणसंघाद्व–हिष्करणं परिहारः।**

कुछ काल के प्रमाण से चतुर्विध श्रमणसंघ से साधु का बहिष्कार कर देना परिहार प्रायश्चित्त है।

विनय – **दर्शनज्ञानचारित्रतपसामतीचारो अशुभक्रिया–स्तासामपोहनंविनयः।**

दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप में अतिचार रूप जो अशुभ क्रियाएँ है उनका त्याग करना विनय है।

वैयावृत्य – **चारित्रस्य कारणानुमननं वैयावृत्यम्।**

चारित्र के कारणों का अनुमनन करना वैयावृत्य है।

स्वाध्याय – **अंगपूर्वाणां सम्यक पठनं स्वाध्यायः।**

अंग और पूर्व का सम्यक् पढ़ना स्वाध्याय है।

ध्यान – **शुभविषये एकाग्रचिन्तानिरोधनं ध्यानम्।**

शुभ विषय में एकाग्र चिन्ता का निरोध करना अर्थात् चित्त को स्थिर करना ध्यान है।

गुप्ति – **आत्मनो गोपनं गुप्तिः।**

आत्मा का गोपन अर्थात् रक्षण करना गुप्ति है।

(बृहत्प्रत्याख्यान–संस्तरस्तवाधिकारः)

महर्षि – **महर्षिः केवलर्द्धिप्राप्तः।**

जो केवल ऋद्धि को प्राप्त है वे महर्षि है।

हर्ष – **हर्ष लाभादिना आनन्दम्।**

लाभ–आदि से होने वाला आनन्द हर्ष है।

शोक	– **इष्टवियोगवशादनुशोचनम् शोकं।** इष्ट वियोग के निमित्त से होने वाला शोच रूप शोक है।
रतिऽरति	– **अभिप्रेत प्राप्ति रतिः। अभिप्रेतऽप्राप्ति अरतिः।** इच्छित की प्राप्ति रूप रति एवं इच्छित की अप्राप्ति रूप अरति है।
चारित्र	– **चारित्रे पापक्रिया निवृत्तिः।** पाप क्रिया का अभाव चारित्र है।
संयोग	– **अनात्मनीनस्यात्मभावः संयोगः।** जो अपने नहीं है उनमें आत्मभाव होना संयोग है।
अज्ञान	– **अश्रद्धानपूर्वकवस्तुपरिच्छेदम् अज्ञानं।** अश्रद्धानपूर्वक वस्तु का जानने वाला ज्ञान अज्ञान है।
ममत्व	– **अनात्मीये आत्मीयभावम् ममत्वं।** अनात्मीय अर्थात् अपने से भिन्न वस्तु में अपनेपन का भाव ममत्व कहलाता है।
ऐश्वर्य	– **द्रव्यादिसम्पत् ऐश्वर्यं।** द्रव्यादि सम्पत्ति का वैभव होना ऐश्वर्य कहलाता है।
आज्ञा	– **वचनानुल्लंघनम् आज्ञा।** अपने द्वारा दिये गये आदेश का उलंघन न होना आज्ञा है।
कुल	– **शुद्धपैतृकाम्नायः कुलं।** पिता के वंश परम्परा की शुद्धि का होना कुल है।
बल	– **शरिराहारादिप्रभवा शक्तिः बलं।** शरीर, आहारादि से उत्पन्न शक्ति का होना बल है।
तप	– **कायसंतापः तपः।** शरीर को संतापित करना तप है।

रूप – **समचतुरस्रसंस्थानगौरादिवर्णकान्तियौवनोद्-भवरमणीयता रूपं।**

समचतुरस्त्र संस्थान, गौर आदि वर्ण, सुन्दर कान्ति और यौवन से उत्पन्न हुई रमणीयता का होना रूप है।

जाति – **मातृकसंतानशुद्धिः जातिः।**

माता के वंश परम्परा की शुद्धि का होना जाति है।

बाल – **पूर्वापरविवेकरहितः बालः। असंयत-सम्यग्दृष्टीनां बालानां।**

पूर्वापर विवेक से रहित बाल कहलाता है। असंयत सम्यग्दृष्टि जीव बाल कहलाते है।

बाल पंडित – **संयतासंयता बाल पंडितः। एकेन्द्रिया-विरतेर्बालाः द्विन्द्रियादिवधविरताः पंडिताः।**

संयतासंयत जीव बाल पंडित कहलाते हैं क्योंकि एकेन्द्रिय जीवों के वध से विरत न होने से बाल है और द्वीन्द्रिय आदि जीवों के वध से विरत हाने से पंडित है।

पंडितमरण – **केवलिनोऽनुम्रियन्ते पंडितमरणं।**

केवली भगवान के मरण को पण्डित मरण कहते है।

संघ – **ऋषियतिमुन्यनगाराणां, ऋषिश्रावक - श्राविकार्यिकाणां सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्र - तपसां वा।**

ऋषि, यति, मुनि और अनगार को संघ कहते हैं अथवा मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका इनको भी संघ अथवा सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप को भी संघ कहते हैं।

बोधि	– **सम्यक्त्वसहितशुभपरिणामः बोधिः।** सम्यक्त्व सहित शुभ परिणाम बोधि है।
बालमरण	– **अतत्त्वरुचीनां शरीरत्यागा बालमरणः।** तत्त्व के प्रति रुचि नहीं जिनकी ऐसे मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा शरीर त्याग करना बालमरण है।
पंडितमरण	– **शुद्धपरिणामचारित्रपूर्वकप्राणत्यागं पंडित-मरणं।** शुद्ध परिणाम रूप चारित्रपूर्वक प्राणों का त्याग करना पण्डितमरण कहलाता है।
उद्वेगमरण	– **इष्टवियोगानिष्टसंयोगाभ्यां त्रासेन वा मरणं उद्वेगमरणं।** इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग के दुःख से अथवा अन्य किसी त्रास से जो मरण होता है वह उद्वेग मरण है।
जातिमरण	– **उत्पन्नमात्रस्य मृत्युर्गर्भस्थस्य वा जातिमरणं।** जन्म लेते ही या गर्भ में ही मर जाना जातिमरण कहलाता है।
मरण	– **शरीरेन्द्रिययोर्वियोगः मरणं।** शरीर और इन्द्रियो का वियोग हो जाना मरण है।
संसार	– **जातिजरामरणलक्षणे संसारः।** जो जन्म-मरण और वृद्धावस्थामय है वह संसार है।
सचित्त	– **सह चित्तेन वर्तत इति सचित्तः।** जो चित्त अर्थात् जीव सहित है वह सचित्त है।
भोग	– **सांसारिकसुखहेतून् भोगः।** जो सांसारिक सुख के कारणभूत है, वे भोग है।

स्वाध्यायमरण – **तत्त्वचिन्तनेन सह यन्मरणं भवति तत्स्वाध्याय मरणमुच्यते।**

अपने अध्ययन, चिंतन–स्मरण करते हुए मरण स्वाध्यायमरण है।

स्थावर – **स्थानशीलाः स्थावराः पृथिवीकायिकादि वनपस्पति पर्यन्ताः स्थावराः।**

जो ठहरने के स्वभाव वाले है वे स्थावर है अथवा पृथ्वीकायिक से लेकर वनस्पति पर्यन्त स्थावर जीव है।

त्रस – **त्रसन्ति उद्विजन्तीति त्रसाः।**

जो त्रास को प्राप्त होते है उद्विग्न होते है वे त्रस हैं।

संवेग – **धर्मे हर्षः संवेगः।**

धर्म में हर्ष भाव संवेग है।

आराधक – **रत्नत्रयस्वामी आराधकः।**

रत्नत्रय का स्वामी आराधक कहलाता है।

ज्ञान – **यथावस्थितवस्तुपरिच्छेदः ज्ञानं।**

जो वस्तु जैसी है उसका उसी रूपी में जानता सो ज्ञान है।

दर्शन – **प्रशमसंवेगानुकंपास्तिक्याभिव्यक्तलक्षण–परिणामः दर्शनं।**

प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य इनकी अभिव्यक्ति लक्षण जो परिणाम है वह दर्शन है।

चारित्र – **संसारकारणनिवृतिं चारित्रं।**

संसार के कारणों का अभाव जिससे हो वह चारित्र है।

संयम	– **प्राणेन्द्रियसंयमनं संयमः।**	
	प्राणियों की रक्षा तथा इन्द्रियों का संयमन यह संयम है।	
मृत्यु	– **भवान्तरं गन्तव्यं मृत्यु।**	
	भवान्तर को जाना मृत्यु है।	
विशुद्ध	– **कर्मकलंकरहितः विशुद्धः।**	
	कर्म कलंक से जो रहित है वह विशुद्ध है।	
शुद्ध	– **केवलज्ञानादियुक्तः शुद्धः।**	
	केवलज्ञानादि से युक्त शुद्ध है।	
शरण	– **संसाराद्रक्षणं शरणं।**	
	जो संसार के दुःखो से बचाये वह शरण है।	

(संक्षेपप्रत्याख्यानाधिकारः)

सावद्य	– **पापकारणं सावद्यं।**
	जो पाप के कारण है उसे सावद्य कहते हैं।
सूत्र	– **सूचनात्सूक्ष्मार्थस्य सूत्रं।**
	सूक्ष्म अर्थ का जो सूचन करे वह सूत्र है।
श्रमण	– **समरसीभाव युक्तः श्रमणः।**
	तप के द्वारा जो श्रम करे सो श्रमण है।

(समाचाराधिकारः)

अर्हत	– **घातिचतुष्टयजेतृन अर्हंतः।**
	घाती चतुष्टय को जीतने वाले अर्हन्त देव है।
समाचार	– **मूलगुणानुरुपमाचारं।**
	मूलगुणों के अनुरूप आचार समाचार है।

श्रमण	– **श्राम्यंति तपस्यंतीति श्रमणाः।** जो श्रम करते है अर्थात् तपश्चरण करते है वे श्रमण है।
यम	– **आमरणात्प्रतिपालनं यमः।** जिनका आमरण पालन किया जाय वह यम है।
नियम	– **कालादिपरिमाणेनाचरणं नियमः।** काल आदि की अवधि से पाले जाने वाले नियम कहलाते है।
विहार	– **देशान्तरगमनेन चारित्रानुष्ठानं विहारं।** देशान्तर में गमन करते हुए चारित्र का अनुष्ठान करना विहार है।
सूत्र	– **द्वादशांगचर्तुदशपूर्वरुपं सूत्रं।** बारह अंग और चौदहपूर्व को सूत्र कहते है।
शिष्य	– **शासितुं योग्यः शिष्यः।** जो अनुशासन के योग्य है, वे शिष्य कहलाते है।
प्रवर्तक	– **संघ प्रवर्तयतीति प्रवर्तकः।** संघ का प्रवर्तन करने वाले प्रवर्तक है।
स्थविर	– **स्थिराणि आचरणानि भवन्तीति स्थविरः।** मर्यादा का उपदेश देने वाले अर्थात् व्यवस्था बनाने वाले स्थविर कहलाते है।
गणधर	– **गणं धरतीति गणधरः।** गण के पालन करने वाले को गणधर कहते है।
द्रव्य शुद्धि	– **शरीरादिशोधनं द्रव्यशुद्धिः।** शरीरगत शुद्धि द्रव्यशुद्धि है।
क्षेत्र शुद्धि	– **क्षेत्रगताशुद्ध–यपनयनं क्षेत्रशुद्धिः।** क्षेत्र में होनेवाली अशुद्धि को दूर करना उस क्षेत्र से अतिरिक्त क्षेत्र का होना क्षेत्र शुद्धि है।

काल शुद्धि – **संध्यागर्जनविद्युदुत्पादाहि समयविवर्जनं कालशुद्धिः।**

सन्ध्याकाल, मेघगर्जन काल, विद्युत्पात और उत्पात आदि काल से रहित समय का होना कालशुद्धि है।

भाव शुद्धि – **क्रोधमानमायालोभादिविवर्जनं भावशुद्धिः।**

क्रोध, मान, माया, लोभ आदि भावों का त्याग करना भावशुद्धि है।

प्रतिलेखन – **शोधनं सन्मार्जनं प्रतिलेखनं।**

शोधन और परिमार्जन, करना प्रतिलेखन है।

वैयावृत्त्य – **कायिकव्यापाराहारादिभिरुपग्रहण वैया-वृत्त्यं।**

अभिप्राय के अनुसार शरीरादि की आहारादि से वैयावृत्ति करना चाहिए।

ग्लान – **व्याध्याद्युपपीडत:क्षीणशक्तिक: ग्लानः।**

व्याधि से पीड़ित अथवा क्षीण शक्ति वाले मुनि ग्लान है।

गुरु – **शिक्षादिक्षाद्युपदेशक:ज्ञानतपोऽधिको गुरुः।**

शिक्षा-दीक्षा तथा उपदेश के दाता गुरु है अथवा जो तप और ज्ञान में अधिक है वे गुरु कहलाते हैं।

बाल – **नवक:पूर्वापरविवेकरहितो बालः।**

नवदीक्षित या पूर्वापर विवेकरहित मुनि बालमुनि कहे जाते हैं।

वृद्ध – **जीर्णोजराग्रस्तो दीक्षादिभिरधिको वृद्धो।**

पुराने मुनि या जरा से जर्जरित मुनि अथवा दीक्षा आदि से अधिक वृद्ध हैं।

शैक्ष – **शास्त्रपठनोद्युक्त: शैक्षः।**

शास्त्रों में उद्युत दुराराध्य आदि मुनि शैक्ष है।

तरुण (मुनि) – **यौवनपिशाचगृहितः तरुणः ।**

यौवन पिशाच से गृहीत मुनि तरूण मुनि है ।

कन्या – **विवाह योग्यां कन्यां ।**

विवाह के योग्य लड़की कन्या है ।

गंभीर – **गुणैरगाधोऽलब्धपरिमाणः गंभीरः ।**

जो गुणों से अगाध हैं अर्थात् जिनके गुणों का कोई माप नहीं है वह गंभीर है ।

चिरप्रव्रजित – **निर्व्यूढव्रतभारो गुणज्येष्ठः चिरप्रव्रजितः ।**

जो व्रतों के भार को धारण करने वाले हैं, गुणों में ज्येष्ठ हैं वे चिर प्रव्रजित कहलाते हैं ।

कथन – **आत्मज्ञातशास्त्रान्यनिवेदने कथनं ।**

अपने जाने हुए शास्त्रों को अन्य को सुनाना कथन है ।

(पंचाचाराधिकारः)

दर्शन – **सम्यक्त्वं तत्त्वरुचिः दर्शनं ।**

सम्क्त्व–तत्त्व रूचि का नाम दर्शन है ।

ज्ञान – **तत्त्व प्रकाशनं ज्ञानं ।**

तत्त्व प्रकाशन का नाम ज्ञान है ।

चारित्र – **पापक्रियानिवृत्तिः चरित्रं ।**

पाप क्रिया से दूर होना चारित्र है ।

तप – **तपति दहति शरीरेन्द्रियाणि तपः ।**

जो शरीर और इन्द्रियों को तपाता है, दहन करता है वह तप है ।

वीर्य – **शक्तिरस्थिशरीरगतबलंवीर्यः ।**

हड्डी और शरीरगत बल को वीर्य कहते है ।

दर्शनाचार – **तत्त्वार्थविषयपरमार्थश्रद्धानुष्ठानं दर्शनाचारः।**

परमार्थभूत जीवादि तत्त्वों का श्रद्धान करना और उन्हीं रूप श्रद्धाविषयक अनुष्ठान करना दर्शनाचार है।

ज्ञानाचार – **पंचविधज्ञाननिमित्तंशास्त्राध्ययनादिक्रिया ज्ञानाचारः।**

पांच प्रकार के ज्ञान के निमित्त अध्ययन आदि क्रियाएँ करना ज्ञानाचार है।

चारित्राचार – **प्राणिवधपरिहारेन्द्रियसंयमनप्रवृत्तिः चारित्राचारः।**

प्राणियों के वध का त्याग करना और इन्द्रियों के संयमन–निरोध में प्रवृत्ति होना चारित्राचार है।

तपाचार – **कायक्लेशाद्यनुष्ठानं तपाचारः।**

कायक्लेश आदि तपों का अनुष्ठान करना तपाचार है।

वीर्याचार – **वीर्यस्यानिह्नवो वीर्याचारः शुभविषयस्वशक्त्योत्साहः।**

शक्ति को नहीं छिपाना अर्थात शुभ विषय में अपनी शक्ति से उत्साह रखना वीर्याचार है।

अतिचार – **प्रमादादन्यथाचरितानि अतिचारः।**

प्रमाद से किये गये अन्यथा आचरण–विपरित आचरण को अतिचार कहते हैं।

शंका – **निश्चयाभावः शुद्धपरिणामाच्चलनं शंकाः।**

निश्चय का अभाव होना या शुद्ध परिणाम से चलित होना शंका है।

निःशंकता – **तत्त्वरुचौ शुद्धपरिणामः निःशंकता।**

तत्त्वों की रूचि में शुद्ध परिणाम का होना निःशंकता है।

कांक्षा – **इहपरलोकभोगाभिलाषः कांक्षाः।**
इस लोक परलोक सम्बन्धी भोगों की अभिलाषा कांक्षा है।

निष्कांक्षता – **सांसारिक सुखारुचिः निष्कांक्षता।**
सांसारिक सुखों में अरुचि का होना निष्कांक्षता है।

विचिकित्सा – **जुगुप्सा विचिकित्साया।**
जुगुप्सा–ग्लानि को विचिकित्सा कहते है।

निर्विचिकित्सा – **अस्नानमलधारणनग्नत्वादिव्रतारुचिनिर्गतो र्निविचिकित्सा।**
अस्नान, मलधारण और नग्नत्व आदि में अरुचि का न होना निर्विचिकित्सा है।

मूढ़दृष्टि – **दृष्टिन्यत्रगताः मूढदृष्टिः।**
अन्यत्र जाने वाली दृष्टि–रूचि मूढ़दृष्टि है।

अमूढ़दृष्टि – **मूढान्यत्रगता न मूढा अमूढा।**
मिथ्याव्यवहार रूप परिणाम न होना अमूढ़दृष्टि है।

अनूपगूहन – **परदोषाष्विकारणंऽनउपगूहनं।**
दूसरे के दोषों को उद्घाटित करना अनूपगूहन है।

उपगूहन – **चातुर्वर्ण्यश्रमणसंघदोषापहरणं प्रमादा चरितस्य च संवरणं उपगूहनं।**
चातुर्वर्ण्य श्रमण संघ में हुए किसी भी दोष को दूर करना अर्थात प्रमाद से कोई दोष रूप आचरण हुआ हो तो उसे ढाँक देना यह उपगूहन है।

स्थितिकरण – **रत्नत्रये शिथिलस्य दृढ़यनं हितमितो–पदेशादिभिः स्थितिकरणं।**
रत्नत्रय में जो शिथिल हो रहा है उसको हितमित उपदेश आदि से दृढ़ कर देना स्थितिकरण है।

वात्सल्य – **सधर्मजीवानामुपकाराय द्रव्योपदेशादिना हितमाचरणं वात्सल्यं।**

साधर्मी जनों के उपकार के लिए प्रासुक द्रव्य व उपदेश आदि के द्वारा उनके हित रूप आचरण करना वात्सल्य है।

प्रभावना – **अर्हत्प्रणितशासनोद्योतनं प्रभावना:।**

अर्हन्त देव के द्वारा प्रणीत जैन शासन का उद्योतन करना प्रभावना है।

निर्वाण – **निर्वाणं अनन्तचतुष्ट भावाप्ति:।**

अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति का नाम निर्वाण है।

पुण्य – **शुभप्रकृतिस्वरुपपरिणतपुद्गलपिंडो।**

शुभ प्रकृति स्वरूप परिणत हुआ पुद्गल पिण्ड पुण्य कहलाता है।

पाप – **अशुभकर्मस्वरुपपरिणत पुदगलप्रचयो।**

अशुभ कर्म स्वरूप परिणत हुआ पुद्गल पिण्ड पाप रूप है।

संवर – **अपूर्वकर्मागमन निरोध: संवर:। शुभाशुभ-कर्मागमनसंवरणं संवर:।**

आने वाले कर्मों का रूक जाना संवर है अथवा शुभ-अशुभ कर्मों के आगमन का रूकना संवर कहलाता है।

निर्जरा – **जीवलग्नकर्मप्रदेशहानि: निर्जरा:।**

जीव में लगे हुए कर्म प्रदेशों की हानि होना निर्जरा है।

बंध – **जीवकर्मप्रदेशान्योन्यसंश्लेषोऽस्वतंत्रीकरण बंध:।**

जीव में लगे हुए कर्म प्रदेश परमाणुओं का परस्पर में संश्लेष हो जाना (एकमेक हो जाना) बंध है।

जीव – **ज्ञानाद्युपयोगवन्तः जीवाः।**

ज्ञान–दर्शन रूप उपयोग वाला होने से जीव है।

कुल – **जातिभेदः कुलं।**

जाति के भेद को कुल कहते हैं।

गति – **गतिर्भवान्तर प्राप्तिः।गतिर्गमनक्रियाः।**

भवान्तर की प्राप्ति का नाम गति है। गमन क्रिया का नाम गति है।

भव्या – **निर्वाणपुरस्कृता भव्याः।**

जो निर्वाण से पुरस्कृत होने योग्य है वे भव्य है।

अज्ञान – **अयथात्मवस्तुपरिच्छित्तिस्वरुपं अज्ञानं।**

अयथात्मक अर्थात् जो वस्तु जैसी है उसको उससे विपरीत जानने रूप लक्षणवाला ज्ञान अज्ञान है।

साकार उपयोग – **गुणीभूतसामान्यविशेषग्रहणप्रवण साकारः उपयोगः।**

सामान्य जो गौंण करके विशेष को ग्रहण करने में कुशल जो उपयोग है, वह साकारोपयोग है।

अनाकार उपयोग – **गुणीभूतविशेषसामान्यग्रहण प्रधानः चत्वारि–दर्शनान्यनाकारउपयोगः।**

जो विशेष को गौण करके सामान्य को ग्रहण करने में प्रधान है वह अनाकारोपयोग है।

परमाणु – **अविभागीनिंरशो यस्य विभागो नास्ति तत्परमाणुद्रव्यम्।**

जिसका दूसरा विभाग अब नहीं हो सकता है उस अविभागी पुद्गल को परमाणु कहते हैं।

पुद्गल – **पूरणगलनसमर्थाः पुद्गलाः।**

पूरण गलन स्वभाववाला है वह पुद्गल है।

पुण्यास्त्रव – **सुखनिमित्तपुद्गल स्कन्धस्यास्त्रवभूता पुण्यास्त्रवाः।**

सुख के निमित्तभूत पुद्गल स्कन्ध जिसके द्वारा आते हैं वह पुण्य का आस्राव (पुण्यास्रव) है ।

पापास्त्रव – **अननुकम्पाऽशुद्धमनोवाक्कायक्रियाः मिथ्या-ज्ञान दर्शनोपयोगः पापास्त्रवः।**

दया न करना तथा अशुद्ध मनवचन काय की क्रिया अर्थात् मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञानोपयोग रूप से परिणत होना ये पाप के आस्रव के लिए कारण है।

मिथ्यात्व – **सर्वज्ञभाषितपदार्थेषु विमोहः संशय-विपर्ययानध्यवसायरुपो मिथ्यात्वं।**

सर्वज्ञ के द्वारा भाषित पदार्थों में संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय रूप परिणाम का नाम मिथ्यात्व है।

आस्त्रव – **शुभाशुभकर्मागमनमास्त्रवः।**

शुभ और अशुभ कर्मों के आगमन को आस्रव कहते हैं।

निर्जरा – **कर्मपुद्गलानामेकदेश गलनं निर्जराः। पूर्वकृत कर्मसटनं गलनं निर्जराः।**

कर्म पुद्गलों का एक देश क्षय निर्जरा है अथवा पूर्व में किये गये कर्मों का झड़ना–गलना निर्जरा है।

भावसंवर – **शुद्ध चेतन परिणामः भावसंवरः।**

शुद्ध चेतन परिणाम भाव संवर है।

द्रव्यसंवर – **द्रव्यकर्मागमनाभावः द्रव्यसंवरः।**

द्रव्य कर्म के आगमन का भाव द्रव्य संवर है।

निवृत्ति – **कर्मणा या निर्वत्यते इति निवृत्तिः।**

नाम कर्म से जिसकी रचना हो उसे निवृत्ति कहते हैं।

परिणाम	– **परिणामो विवर्तः।** उसी में से उत्पन्न हो होकर उसी में लीन हो जाना विवर्त या परिवर्तन परिणाम है।
आगम	– **जिनस्यवचनं आगमः।** जिनेन्द्र भगवान के वचन आगम है।
श्रमण	– **समरसीयुक्तः श्रमणः।** जो समता रस से युक्त है वह श्रमण है।
आतापन	– **व्रतपूर्वकमुष्णसहनं आतापनां।** संकल्पपूर्वक उष्णता (गर्मी) को सहन करना आतापन है।
सर्वघाति स्पर्धक	– **सर्वप्रकारेणात्मगुणप्रच्छादिकाः कर्म-शक्त्यः सर्वघातिस्पर्द्धकः।** सर्व प्रकार से आत्मा के गुणों को आच्छादन करने वाली जो कर्मों की शक्तियाँ है उनको सर्वघाति स्पर्द्धक कहते हैं।
देशघाति स्पर्धक	– **विवक्षितैकदेशेनात्मगुणप्रच्छादिकाः कर्म-शक्त्यः देशघातिस्पर्द्धकः।** विवक्षित एक देश जो आत्मा के गुणों का आच्छादन करने वाली कर्म शक्तियाँ है वे देशघाति स्पर्द्धक कहलाती हैं।
शील	– **व्रतपरिरक्षणं शीलं।** व्रतों की रक्षा जिससे हो वह शील है।
तप	– **कायादिखेदः तपः।** शरीरादि को कष्ट देना तप है।
टीका	– **विस्तरेण व्याख्या टीका।** विस्तार से व्याख्या करने वाली टीका होती है।

गुप्ति	– **मनोवचनकायव्यापार निरोधोगुप्तिः।** मन की प्रवृत्ति, वचन की प्रवृत्ति और काय की प्रवृत्ति को रोकना गुप्ति है।
सूत्र	– **द्वांदशांग चतुर्दश पूर्वरुपं सूत्रं।** द्वादशांग और चौदह पूर्व रूप सूत्र है।
शुद्धोपयोग	– **शुद्धमनोवाक्क ायक्रियाः शुद्धोपयोगः।** मन–वचन–काय की शुद्धि क्रिया शुद्धोपयोग है।
योग	– **जीवस्य चेष्टाः योगः।** जीव की चेष्टा योग है।
प्रकृतिबंध	– **कार्मणवर्गणागतपुद्गलानां ज्ञानावरणा-दिभावेनपरिणामः प्रकृतिबंध।** कार्मण वर्गणा रूप से आये हुए पुद्गलों का ज्ञानावरणादि भाव में परिणमन कर जाना प्रकृतिबंध है।
प्रदेशबंध	– **कर्मस्वरुपापरिणतानामनन्तानन्तानां जीव-प्रदेशैः सहसंश्लेषः प्रदेशबन्धः।** कर्म स्वरूप से परिणत अनन्तानन्त पुद्गलों का जीव के प्रदेशों के साथ संश्लेष (गाढ़) सम्बन्ध हो जाना प्रदेश बंध है।
अनुभागबंध	– **जीवप्रदेशानुश्लिष्टानां जीवस्वरुपान्यथा-करणस्सोऽनुभागबंधः।** जीव के प्रदेशों में संश्लिष्ट हुए पुद्गलों का जीव के स्वरूप को अन्यथा करना अर्थात् सुख–दुःख रूप फल का अनुभव होना अनुभाग बन्ध है।

स्थितिबंध – **कर्मरुपेण परिणतानां पुद्‌गलानां जीवप्रदेशैः सह यावत्कालं अवस्थितिः स स्थितिबंधः।**

कर्म रूप से परिणत हुए पुद्‌गलों का जीव के प्रदेशों के साथ जितने काल तक सम्बन्ध रहता है उसे स्थिति बन्ध कहते है।

सविपाक निर्जरा – **उदयस्वरुपेण कर्मानुभवनं सविपाक निर्जराः।**

उदय रूप से कर्मों के फल का अनुभव करना सविपाक निर्जरा है।

अविपाकनिर्जरा – **अनुभवमन्तरेणैकहेलया कारणवशात् कर्मविनाशः अविपाकनिर्जराः।**

अनुभव के बिना ही लीलामात्र में कारणों के निमित्त से जो कर्म झड़ जाते है वह अविपाक निर्जरा कहलाती है।

परिवर्तन – **पठितशास्त्रपरिपाट्या परिवर्तनः।**

पढ़े हुए शास्त्र को फेरना परिवर्तन है।

तापस – **कन्दमूलफलाद्याहारा वनवासिनः जटाको–पीनादिधारिणः तापसा**

कंद, मूल और फल आदि का भक्षण करने वाले वन में रहने वाले और जटा, कौपीन आदि को धारण करने वाले तापस कहलाते है।

परिव्राजक – **एकदण्डित्रिदण्डद्यादयः स्नानशीला शुचिवादिनः परिव्राजकाः।**

एक दण्डी, त्रिदण्डी आदि साधु जो स्नान में धर्म मानने वाले या अपने को पवित्र मानने वाले है, वे परिव्राजक कहलाते हैं।

सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष – इन्द्रियमनोविषयाद्न्यार्थविज्ञानं सा.व्य. प्रत्यक्षं ।

इन्द्रियों और विषयों के सन्निपात के अनन्तर उत्पन्न हुआ जो सविकल्प ज्ञान है वह ईषत् प्रत्यक्ष अर्थात् सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष ज्ञान है ।

अनुमान – साध्याविनाभाविलिङ्गादुत्पन्न अनुमानं ।

साध्य के साथ अविनाभावी लिंग से उत्पन्न हुआ ज्ञान अनुमान ज्ञान है ।

तर्क – साध्यसाधनसम्बन्धग्राहकस्तर्कः ।

साध्य–साधन के सम्बन्ध को ग्रहण करने वाला तर्क ज्ञान है ।

उपमान – प्रसिद्धसाधर्म्यात्साध्यसाधनं उपमानं ।

सदृशता की प्रसिद्धि से साध्य साधन का ज्ञान होना उपमान है ।

कालज्ञानाचार – स्वाध्यायवेलायां पठनपरिवर्तनव्याख्याना–दिकं क्रियते कालज्ञानाचारः ।

स्वाध्याय की बेला में सम्यक् शास्त्र का पढ़ना, पढ़े हुए को फेरना और व्याख्यान आदि कार्य किये जाते हैं वह काल भी ज्ञानाचार है ।

विनयाचार – कायिकवाचिकमानसशुद्धपरिणामैः श्रुतस्य पाठो व्याख्यानं विनयाचारः ।

कायिक, वाचिक, मानसिक शुद्ध परिणामों से सहित होकर शास्त्र का पढ़ना, परिवर्तन करना या व्याख्यान करना विनयाचार है ।

उपधानाचार – अवग्रहविशेषेण पठनादिकं उपधानाचारः ।

अवग्रह नियम विशेष करके पठन आदि करना उपधानाचार है ।

बहुमानाचार – **पूजासत्कारादिकेन पाठादिकं बहु-मानाचारः।**

पूजा सत्कार आदि के द्वारा पठन आदि करना बहुमान आचार है।

व्यञ्जनाचार – **वर्णपदवाक्यशुद्धिः व्याकरणोपदेशेन पाठादि र्व्यञ्जनाचारः।**

वर्ण, पद और वाक्य की शुद्धि व्याकरण के अनुसार करना व्यञ्जनाचार है।

अर्थाचार – **अर्थोऽभिधेयोऽनेकान्तात्मकस्तेन सह पाठादि अर्थाचारः।**

अर्थ अनेकान्तात्मक है, उसके साथ पठन आदि करना अर्थाचार है।

तदुभयाचार – **शब्दार्थशुद्ध्या पाठादि तदुभयाचारः।**

शब्द और अर्थ की शुद्धि से पठन आदि करना उभयाचार है।

अनिह्नवाचार – **यस्मात् पठितं श्रुतं स एव प्रकाशकीयः निह्नवनं।**

जिससे शास्त्र पढ़ा है उसी का नाम प्रकाशित करना अनिह्नवाचार है।

संकल्प – **पुत्रकलत्रादौ बहिर्द्रव्ये ममेदमिति कल्पना संकल्पः।**

स्त्री-पुत्र आदि बाह्य द्रव्य में 'ये मेरे है' ऐसी कल्पना करना संकल्प है।

विकल्प – **अभ्यन्तरे सुख्यहं दुःख्यहमितिहर्ष विषादकारणं विकल्पः।**

अन्तरंग में मैं सुखी हूँ मैं दुःखी हूँ इस प्रकार जो हर्ष तथा विषाद (खेद) का करना है, वह विकल्प है।

प्रत्येकबुद्ध	– **तथैवैकं कारणं प्रत्याश्रित्य बुद्धाः प्रत्येक-बुद्धाः।** जो किसी एक कारण को निमित्त करके प्रबुद्ध हुए हैं वे प्रत्येक बुद्ध हैं।
ग्राम-नगर	– **वृत्यावृतः ग्रामो। चतुर्गोपुरोदभासि शालं नगरं।** बाड़ से वेष्टित को ग्राम कहते है। चार गोपुर वाले परकोटे से सहित को नगर कहते है।
अरण्य	– **महाअटवी गहनं अरण्य।** महाअटवी को अरण्य कहते हैं।
ईर्यासमिति	– **धर्मार्थिनो यत्नपरस्य गमनमीर्यासमितिः।** यत्न में तत्पर हुए धर्मार्थी अथवा धर्म की इच्छा रखते हुए मुनि का गमन ईर्यासमिति है।
भाषासमिति	– **सावद्यरहितभाषणं भाषासमितिः।** सावद्य रहित वचन बोलना भाषा समिति है।
एषणासमिति	– **कृतकारितनुमतरहिताहारादानमशन-समितिः।** कृत, कारित, अनुमोदना से रहित आहार को ग्रहण करना एषणा समिति है।
निक्षेपग्रहण समिति	– **पुस्तिकाकुण्डिकादिव्यवस्थापनं निक्षेपणं ग्रहणं निक्षेपग्रहणसमितिः।** पुस्तक, कमण्डलु आदि देख शोधकर रखना और ग्रहण करना आदान-निक्षेपण समिति है।
प्रतिष्ठापना समिति	– **उच्चारादीनां मूत्रपुरीषादीनां प्रासुक प्रदेशे त्यागः प्रतिष्ठापनसमितिः।** मलमूत्र का प्रासुक स्थान में त्याग करना प्रतिष्ठापना समिति है।
उपयोग	– **ज्ञानदर्शनविषयो यत्नः उपयोगः।** ज्ञान दर्शन विषयक प्रयत्न उपयोग है।

आलंबन	– **देवतानिर्ग्रन्थयतिधर्मादिकारणं आलंबनः।** देववन्दना, निर्ग्रन्थ यतियों की वन्दना एवं धर्म आदि का निमित्त होना आलम्बन है।
अनशन	– **चतुर्विधाहार परित्यागः अनशनं।** चार प्रकार के आहार का त्याग करना अनशन है।
अवमौदर्य	– **अवमौदर्यमतृप्तिभोजनं।** पेटभर भोजन न करना अवमौदर्य है।
रसपरित्याग	– **स्वाभिलषितस्निग्धमधुराम्लकटुकादिरस–परिहारः।** अपने लिए इष्ट स्निग्ध, मधुर, अम्ल, कटुक आदि रसों का परिहार करना रस परित्याग है।
वृत्ति परिसंख्यान	– **गृहदायकभाजनौदनकालादिनां परिसंख्यान–पूर्वको वृत्तिपरिसंख्यानः।** गृह, दातार, बर्तनों का, भात आदि भोज्य वस्तु का या काल आदि का गणनापूर्वक नियम करना वृत्तिपरिसंख्यान है।
कायक्लेश	– **शरीरस्य परितापः कायक्लेशं।** शरीर को परिताप अर्थात् क्लेश देना कायक्लेश है।
विविक्तशयनासन	– **स्त्रीपशुषण्ढकविवर्जितं स्थानसेवनं विविक्त–शयनासनं।** स्त्री, पशु और नपुंसक से वर्जित स्थान का सेवन करना विविक्तशयनासन तप है।
शयन	– **एकपार्श्वमृतकदण्डादिशयनं।** एक पसवाड़े से या मृतकासन से या दण्डे के समान लम्बे पड़कर सोना शयन है।
प्रायश्चित	– **पूर्वापराधशोधनं प्रायश्चितः।** पूर्व के किये हुए अपराधों का शोधन करना प्रायश्चित है।

विनय – **अनुद्धत वृत्तिः विनयः।**

अनुद्वत–नम्र वृत्ति का होना विनय है।

वैयावृत्त – **स्वशक्त्योपकारः वैयावृत्यः।**

अपनी शक्ति के अनुसार उपकार करना वैयावृत्य है।

स्वाध्याय – **सिद्धांताद्यध्ययनं स्वाध्यायः।**

सिद्धान्त आदि का अध्ययन करना स्वाध्याय है।

ध्यान – **एकाग्रचिन्तानिरोधः ध्यानं।**

एक विषय पर चिन्ता का निरोध करना ध्यान है।

व्युत्सर्ग – **परिग्रहपरित्यागो व्युत्सर्गतपः।**

परिग्रह का त्याग करना व्युत्सर्ग तप है।

बल – **आहारौषधादि कृतसामर्थ्य बलं।**

आहार और औषधि के द्वारा जो सामर्थ्य की प्राप्ति है वह बल है।

दर्शन – **सत्तावलोकनं दर्शनं।**

सत्ता का अवलोकन मात्र दर्शन है।

(पिण्ड–शुद्धिऽधिकारः)

अधः कर्म – **निकृष्ट व्यापारः षडजीवनिकायवधकरः अधः कर्म।**

छह जीव निकायों का वध करने वाला होने से निकृष्ट व्यापार रूप अधःकर्म है।

(षडावश्यकाधिकारः)

प्रतिक्रमण – **व्यतिक्रान्तदोषनिर्हरणं प्रतिक्रमणं।**

पूर्व में किये गये दोषों का निराकरण करना प्रतिक्रमण है।

प्रत्याख्यान – **भविष्यकालविषयवस्तु परित्यागः प्रत्याख्यानं।**

भविष्यकाल के लिए वस्तु का त्याग करना प्रत्याख्यान है।

तीर्थ – **संसारतारणोपायं तीर्थं।**

संसार से पार होने के उपाय को तीर्थ कहते है।

केवली – **सर्वप्रत्यक्षवबोधाः केवलिः।**

सर्व को प्रत्यक्ष करने वाला जिनका ज्ञान है वे केवली है।

प्रतिक्रमण – **कृतकारितानुमतातिचारान्निवर्त्तनं प्रतिक्रमणं।**

कृत, कारित और अनुमोदना से हुए अतिचार को दूर करना प्रतिक्रमण है।

आलोचना – **स्वापराधाविष्करणंआलोचना।**

अपने अपराधो को प्रकट करना अर्थात् अपने अपराधो को नहीं छिपाना आलोचना है।

प्रत्याख्यान – **अतीतभविष्यद्वर्त्तमानकालविषयातिचार-निर्हरणं प्रत्याख्यानं।**

भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान इन तीनों कालविषयक अतिचारों का निरसन करना प्रत्याख्यान है।

कायोत्सर्ग – **शरीरस्योत्सर्गः परित्यागः कायोत्सर्गः।**

शरीर का उत्सर्ग अर्थात् त्याग कायोत्सर्ग है।

(द्वादशानुप्रेक्षाधिकार:)

बोधि – **सम्यक्त्वादिलाभं बोधि। (चान्तकाले संन्यासेन प्राणत्यागं चिन्तयेत)**

सम्यक्त्व का लाभ होना और अन्तकाल में संन्यासपूर्वक प्राणत्याग करना बोधि है।

यौवन – **द्वादशवर्षेभ्य उर्ध्वं वय: परिणाम: यौवनं।**

बाहर वर्ष से ऊपर की उम्र का परिणाम यौवन है।

नीति – **स्वपक्षपरपक्षवृद्धिहानिप्रतिपादनोपायो नीति:।**

स्वपक्ष की वृद्धि और परपक्ष की हानि के प्रतिपादन का उपाय नीति है।

(अनगारभावनाधिकार:)

लिंग शुद्धि – **लिंगस्य शुद्धि: लिंगशुद्धि:।**

लिंग के अनुरूप आचरण करना लिंगशुद्धि है।

व्रत शुद्धि – **व्रतानां निरतीचारता व्रतशुद्धि:।**

व्रतों को निरतिचार पालना व्रतशुद्धि है।

वसति शुद्धि – **परमवैराग्यकारण स्थानं वसतिशुद्धि:।**

परम वैराग्य का कारण स्थान वसति शुद्धि है।

विहार शुद्धि – **विहारोऽनियतवासो विहारशुद्धि।**

अनियतवास का नाम विहार है, उसकीशुद्धि विहार शुद्धि है।

भिक्षा शुद्धि – **चतुर्विधाहार: शुद्धि भिक्षा शुद्धि:।**

चार प्रकार के आहार का नाम भिक्षा उसकी शुद्धि भिक्षा शुद्धि है।

ज्ञान शुद्धि – **यथावस्थितवस्त्ववगमो ज्ञान शुद्धि:।**

यथावस्थित पदार्थों का जानना ज्ञान है उसकी शुद्धि ज्ञान शुद्धि है।

उज्झन शुद्धि – **शरीराद्यममत्वं परित्यागः उज्झनशुद्धिः।**
शरीरादि के ममत्व का त्याग करना उज्झनशुद्धि है।

वाक्य शुद्धि – **स्त्रीकथादिविरहितवचनं वाक्यशुद्धि।**
स्त्रीकथा आदि से रहित वचन बोलना वाक्य शुद्धि है।

तप शुद्धि – **पूर्वसंचितकर्ममलशोधनसमर्थानुष्ठानं तप-शुद्धिः।**
पूर्व संचित कर्ममलके शोधन में समर्थ अनुष्ठान तप है उसकी शुद्धि तप शुद्धि है।

ध्यान शुद्धि – **ऐकाग्रचिन्तानिरोधनं ध्यानं तस्य शुद्धिः ध्यान-शुद्धिः।**
एकाग्रचिंता का निरोध ध्यान है, उसकी शुद्धि ध्यान शुद्धि है।

(समयसाराधिकारः)

संहनन – **अस्थिबंधबलोदभूतशक्तिं वीर्यान्तरायक्षयोप-शमं संहननं।**
हड्डीयों के बन्धन और बल से उत्पन्न हुयी शक्ति अथवा वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम विशेष का नाम संहनन है।

श्रमण – **समतैकतावैराग्याद्याधारः श्रमणः।**
समता, एकत्व भावना और वैराग्य आदि के आधारभूत जो है वे श्रमण है।

द्रव्य परिवर्तन – **कर्मनोकर्मतत्त्वस्वरुपग्रहणपरित्यजनानि द्रव्य-परिवर्तनं।**
कर्म और नो कर्म स्वरूप पुद्गल वर्गणाओं को ग्रहण करना और छोड़ना द्रव्य-परिवर्तन है।

क्षेत्र परिवर्तन	– **सर्वप्रदेशेषूत्पत्तिमरणानि क्षेत्रपरिवर्तनं।** सर्व आकाश प्रदेशों में जन्म मरण करना क्षेत्रपरिवर्तन है।
काल परिवर्तन	– **उत्सर्पिण्यवसर्विणीसमयेषूत्पत्तिमरणानि कालपरिवर्तनं।** उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के सर्वसमयों में जन्म मरण करना काल–परिवर्तन है।
भाव परिवर्तन	– **जघन्यमध्यमोत्कृष्ट बन्धस्थितिबन्धररुपाणि–भावपरिवर्तनं।** जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट बन्ध रूप स्थितिबन्ध होना भाव–परिवर्तन है।
भव परिवर्तन	– **सर्वायुर्विकल्पेषुत्पत्तिमरणानिभव – परिवर्तनं।** सम्पूर्ण आयु के विकल्पों में जन्म मरण ग्रहण करना भव–परिवर्तन है।
ऋजुसूत्र	– **अतीतनागत कोटिविनिर्मुक्तवस्तु समयमात्रं ऋजुसूत्रः।** वस्तु की अतीत और अनागत पर्याय को छोड़ एक समय मात्र पर्याय को ऋजुसूत्रनय विषय बनाता है।

(शीलगुणाधिकारः)

अतिक्रमण	– **संयतस्य संयतसमूहमध्यस्थस्य विषयाभिकांक्षा अतिक्रमणं।** संयत समूह के मध्य में रहते हुए भी जो संयत के विषयों की आकांक्षा होती है, उसका नाम अतिक्रमण है।
व्यतिक्रमण	– **संयतस्य संयतसमूहं त्यक्वा विषयोपकरणार्जनम्।** संयत के समुदाय को छोड़कर विषयों के उपकरण

का अर्जन करने वाले संयत के व्यतिक्रमण दोष होता है।

अतिचार – **व्रतशैथिल्यं ईषदसंयमसेवनं अतिचारः।**
व्रतों में शिथिलता का होना या किंचित् रूप से असंयम का सेवन करना अतिचार है।

अनाचार – **व्रतभंगः सर्वथा स्वेच्छाप्रवर्तनम् अनाचारः।**
व्रतों का भंग होना या सर्वथा स्वेच्छा से प्रवर्तन करना अनाचार है।

(पर्याप्तिऽधिकारः)

पर्याप्ति – **आहारादिकारणनिष्पत्तयः पर्याप्तय।**
आहार आदि कारणों की पूर्णता का होना पर्याप्ति है।

संस्थान – **अवयवसन्निवेशविशेषः संस्थानं।**
अवयवों की रचना विशेष संस्थान है।

आयु – **नरकादिगतिस्थितिकारणपुद्गलप्रचयः आयुः।**
नरक आदि गतियों में स्थिति के लिए कारणभूत पुद्गल समूह को आयु कहते है।

प्रवीचार – **स्पर्शनेन्द्रियाद्यनुरागसेवा प्रवीचारः।**
स्पर्शन इन्द्रियादि से अनुराग पूर्वक कामसेवन करना प्रवीचार है।

उपपाद – **अन्यस्मादागत्योत्पत्तिः उपपादः।**
अन्य स्थान से आकर उत्पन्न होना उपपाद है।

उद्वर्तन – **अन्यस्मादन्यत्रोत्पत्तिः उद्वर्त्तनं।**
यहाँ से जाकर अन्यत्र जन्म लेना उद्वर्तन है।

प्रकृति – **ज्ञानावरणादिस्वरुपेण पुद्गल परिणामः प्रकृतिः।**

ज्ञानावरण आदि रूप से पुद्गल का परिणत होना प्रकृति है।

प्रदेश	–	**कर्मभावपरिणतपुद्गलस्कन्धानां परमाणु-परिच्छेदेनावधारणं प्रदेशः।** कर्म भाव से परिणत पुद्गल स्कन्धों को परमाणु के परिणाम से निश्चित करना प्रदेश है।
स्थिति	–	**कर्मस्वरूपमजहतामवस्थितिकालः स्थितिः।** कर्म स्वरूप को न छोड़ते हुए पुद्गलों के रहने का काल स्थिति है।
अनुभाग	–	**कर्मणां रसविशेषः अनुभागः।** कर्मों का रस विशेष अनुभाग है।
बंध	–	**परवशीकरणं बंधः।** जो जीव को परवश करता है वह बन्ध है।
कुल	–	**जातिभेदाः कुलः।** जाति के भेद को कुल कहते है।
आहारपर्याप्ति	–	**येन कारणेन भुक्तमाहारं खलरस-भागकरणे समर्थो जीवः तत् कारणस्य निर्वृत्तिः आहारपर्याप्तिः।** जिस कारण से ग्रहण किया आहार खल रस रूप परिणमन करने में समर्थ होता है, उस कारण की सम्पूर्णता का होना आहार पर्याप्ति है।
शरीरपर्याप्ति	–	**येन कारणेन शरीरयोग्यपुद्गलानि तत्स्वरुपेण-परिणमने समर्थो जीवः तत् कारणस्य निवृत्तिः शरीरपर्याप्तिः।** जिस कारण से शरीर के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को शरीर रूप परिणमन करने में जीव समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता का होना शरीर पर्याप्ति है।

इन्द्रियपर्याप्ति	– **येन कारणेन पंचेन्द्रिय योग्य पुद्‌गलानि ज्ञातुम् समर्थो जीवः तत् कारणस्य निर्वृत्तिः इन्द्रियपर्याप्तिः।** जिस कारण से पंचेन्द्रिय के योग्य पुद्‌गल द्रव्यों को ग्रहण करके यह जीव जानने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता का नाम इन्द्रिय पर्याप्ति है।
भाषापर्याप्ति	– **चतुर्विधभाषायोग्यं पुद्‌गलानि तत्स्वरूपेण परिणामने समर्थो जीवः तत् कारणस्य निर्वृत्तिः भाषापर्याप्तिः।** जिस कारण से जीव चार प्रकार की भाषा के योग्य पुद्‌गल द्रव्यों का आश्रय लेकर उन्हें चतुर्विध भाषारूप परिणमन कराने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता का नाम भाषा पर्याप्ति है।
श्वासोच्छ्‌वास	– **येन कारणेन श्वासोच्छ्‌वास योग्य पुद्‌गलानि ग्रहितुं समर्थो जीवः तत् कारणस्य निर्वृत्तिः श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्तिः।** जिस कारण के द्वारा यह जीव श्वासोच्छ्‌वास के योग्य पुद्‌गल द्रव्यों को ग्रहण करके उसी रूप रचना करने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता को श्वासोच्छ्‌वास अथवा आनप्राण पर्याप्ति कहते है।
मनः पर्याप्ति	– **चतुर्विधमनोयोग्य पुद्‌गलानि तत्स्वरुपेण परिणमने समर्थो जीवः तत् कारणस्य निर्वृत्तिः मनःपर्याप्तिः।** जिस कारण से जीव चार प्रकार के मन योग्य पुद्‌गल द्रव्यों को ग्रहण करके उन्हें चार प्रकार की मनःपर्याप्ति में परिणमन कराने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता को मनः पर्याप्ति कहते है।
निर्माण	– **नियतमानं निमानं।** निश्चिय मान–माप को निर्माण कहते हैं।

अस्तित्व – **अस्ति इत्येतस्यभावोऽस्तित्वं।**
होने का भाव अस्तित्व है।

वस्तुत्व – **वस्तुनोभावः वस्तुत्वं।**
वस्तु का जो भाव है वह वस्तुत्व है।

द्रव्यत्व – **द्रव्यस्यभावो द्रव्यत्वं।**
द्रव्य का जो भाव है वह द्रव्यत्व है।

द्रव्य – **निजनिजप्रदेश-समूहैरखण्डवृत्या स्वभाव-विभावपर्यायान् द्रवति, द्रोष्यति, अदुद्रुवदिति द्रव्यम्।**
जो अपने प्रदेश समूह के द्वारा अखण्डपने से अपने स्वभाव-विभाव पर्यायों को प्राप्त होता है, होवेगा, हो चुका है वह द्रव्य है।

सत् – **1. सीदति स्वकीयान् गुणपर्यायान् व्याप्नोतीति सत्।**
अपने गुण और पर्यायों को व्याप्त होने वाला सत् है।

2. उत्पादव्ययध्रौव्य युक्तं सत्।
जो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से युक्त है।

प्रमेयत्व – **प्रमेयस्यभावः प्रमेयत्वं।**
प्रमेय के भाव को प्रमेयत्व कहते है।

प्रमेय – **प्रमाणेन स्वपररूपं परिछेद्यं प्रमेयम्।**
प्रमाण के द्वारा जानने के योग्य जो स्व और परस्वरूप है, वह प्रमेय है।

अगुरुलघुत्व – **अगुरुलघोर्भावोऽगुरुलघुत्वम्।**
अगुरुलघु का जो भाव है वह अगुरुलघुत्व है।

अगुरुलघु – **सूक्ष्मा अवाग्गोचराः प्रतिक्षणं वर्तमाना आगम-प्रमाण्यादभ्युपगम्या अगुरुलघु-गुणाः।**

जो सूक्ष्म है, वचन के अगोचर है, प्रतिसमय में परिणमनशील है तथा आगम प्रमाण से जाना जाता है, वह अगुरुलघुगुण है।

प्रदेशत्व – **प्रदेशस्यभावः प्रदेशत्वं क्षेत्रत्वं।**
प्रदेश का भाव प्रदेशत्व है अथवा क्षेत्रत्व है।

प्रदेश – **अविभागिपुद्गलपरमाणुनावष्टब्धम्।**
एक अविभागी पुद्गल परमाणु के द्वारा व्याप्त क्षेत्र को प्रदेश कहते है।

चेतनत्व – **चेतनस्यभावः चेतनत्वं।**
चेतन के भाव को चेतनत्व कहते हैं।

चैतन्य – **चैतन्यं अनुभवनम्।**
चैतन्य नाम अनुभूति का है।

अचेतनत्व – **अचेतनस्यभावोऽचेतनत्वं।**
अचेतन के भाव को अचेतनत्व कहते हैं।

अचैतन्य – **अचैतन्यम् अननुभवनम्।**
अचैतन्य का मतलब अननुभूति है।

मूर्तत्व (मूर्त) – **मूर्तस्यभावो मूर्तत्वं ।**
मूर्त के भाव को अर्थात् रूप, रस, गन्ध, स्पर्शयुक्तता को मूर्तत्व कहते है।

अमूर्तत्व (अमूर्त) – **अमूर्तस्य भावो अमूर्तत्वं।**
अमूर्त के भाव को अमूर्तत्व कहते हैं।

पर्याय – **गुणविकाराः पर्यायाः।**
गुणों के विकार को पर्याय कहते हैं।

स्वभाव – **द्रव्याणां स्वरूपाणि।**
द्रव्य के स्वरूप को स्वभाव कहते हैं।

भाव – **तत्काल पर्यायाक्रान्तं वस्तुभावो विधियते।**
तत्काल पर्याय को प्राप्त वस्तु भाव कहलाती है।

अस्तिस्वभाव – **स्वभावलाभादच्युतत्वादस्तिस्वभावः।**
जिस द्रव्य को जो स्वभाव प्राप्त है उससे कभी च्युत नहीं होना अस्तिस्वभाव है।

नास्तिस्वभाव – **परस्वरूपेणाभावान्नास्तिस्वभावः।**
परस्वरूप नहीं होना नास्ति स्वभाव है।

नित्यस्वभाव – **निजनिजनानापर्यायेषु तदेवेदमिति द्रव्यस्योपलम्भान्नित्यस्वभावः।**
अपनी-अपनी नाना पर्यायों में 'यह वही है' इस प्रकार द्रव्य की प्राप्ति नित्यस्वभाव है।

अनित्यस्वभाव – **तस्यापि अनेक पर्याय परिणामत्वादनित्यस्वभावः।**
उस द्रव्य का अनेक पर्याय रूप परिणत होने से अनित्यस्वभाव है।

एकस्वभाव – **स्वभावानामेकाधारत्वादेकस्वभावः।**
सम्पूर्ण स्वभावों का एक आधार होने से एक स्वभाव है।

अनेकस्वभाव – **एकस्यापि अनेकस्वभावोपलम्भात् अनेकस्वभावः।**
एक ही द्रव्य के अनेक स्वभावों की उपलब्धि होने से अनेकस्वभाव है।

भेदस्वभाव – **गुणगुण्यादिसंज्ञाभेदाद्भेदस्वभावः।**
गुण गुणी आदि में संज्ञा, संख्या, लक्षण और प्रयोजन की अपेक्षा भेद होने से भेदस्वभाव है।

अभेदस्वभाव – **गुणगुण्याद्येकस्वभावात् अभेदस्वभावः।**
गुण और गुणी का एक स्वभाव होने से अभेदस्वभाव है।

भव्यस्वभाव – **भाविकाले स्वरूपाकारभवनात् भव्यस्वभावः।**
भाविकाल में अपना स्वरूप होने से भव्यस्वभाव है।

अभव्यस्वभाव – **कालत्रयेऽपि परस्वरूपाकाराभवनात् अभव्यस्वभावः।**
त्रिकाल में भी परस्वरूपाकार नहीं होगा अतः अभव्यस्वभाव है।

भव्य-अभव्य – **भवितुं परिणमितुं योग्यत्वं तु भव्यत्वं, तेन विशिष्टत्वाद् भव्याः तद्विपरीतेनाभव्याः।**
होने योग्य अथवा परिणमन करने योग्य वह भव्यत्व है। इससे विपरीत अभव्य है।

परमस्वभाव – **पारिणामिकभावप्रधानत्वेन परमस्वभावः।**
पारिणामिक भाव की प्रधानता से परमस्वभाव है।

एकप्रदेशस्वभाव – **अखंडापेक्षया एकप्रदेशस्वभावः।**
अखण्डपने की अपेक्षा एक प्रदेश स्वभाव है।

अनेकप्रदेशस्वभाव – **भेदापेक्षया अनेकप्रेदशस्वभावः।**
भेदपने की अपेक्षा अनेक प्रदेश स्वभाव है।

विभावस्वभाव – **स्वभावादन्यथा भवनं विभावस्वभावः।**
स्वभाव से अन्यथा होना विभावस्वभाव है।

शुद्धस्वभाव – **शुद्धं केवलभावं।**
कैवल्य अर्थात् शुद्ध भाव को शुद्धस्वभाव कहते हैं।

अशुद्धस्वभाव – **शुद्धात् विपरीतमशुद्धं।**
शुद्ध स्वभाव से विपरीत अशुद्ध स्वभाव है।

उपचरितस्वभाव – **स्वभावस्यान्यत्रोपचारादुपचरितस्वभावाः।**
स्वभाव का अन्यत्र उपचार करना उपचरित स्वभाव है।

द्रव्यार्थिकनय – **द्रव्यमेवार्थः प्रयोजनमस्येति द्रव्यार्थिकः।**
द्रव्य जिसका प्रयोजन (विषय) है वह द्रव्यार्थिकनय है।

पर्यायार्थिकनय – **पर्याय एवार्थः प्रयोजनस्येति पर्यायार्थिकः।**
पर्याय ही जिसका प्रयोजन है वह पर्यायार्थिक नय है।

नैगम – **नैकं गच्छतीति निगमः निगमोविकल्प-स्तत्रभवो नैगमः।**

जो एक को प्राप्त नहीं होता निगम है। निगम का अर्थ विकल्प जो विकल्प को ग्रहण करे वह नैगम नय है।

संग्रह – **अभेदरूपतया वस्तुजातं संगृह्णातीति संग्रहः।**

जो नय अभेदरूप से संपूर्ण वस्तु समूह को विषय करता है वह संग्रह नय है।

व्यवहार – **संग्रहेण गृहीतार्थस्य भेदरूपतया वस्तु व्यवह्रियत इति व्यवहारः।**

संग्रह नय से ग्रहण किये हुए पदार्थ को भेदरूप से व्यवहार करता है वह व्यवहारनय है।

ऋजुसूत्र – **ऋजु प्रांजलं सूत्रयतीति ऋजुसूत्रः।**

जो नय ऋजु अर्थात् सरल को ग्रहण करता है वह ऋजुसूत्र नय है।

शब्द – **शब्दात् व्याकरणात् प्रकृतिप्रत्ययद्वारेण सिद्धः शब्दनयः।**

जो नय व्याकरण से प्रकृति और प्रत्यय के द्वारा शब्द को विषय करता है वह शब्द नय है।

समभिरूढ – **परस्परेणाभिरूढः समभिरूढः, शब्द-भेदेऽपि अर्थभेदो नास्तिः।**

परस्पर में अभिरूढ़ शब्द को ग्रहण करने वाला नय समभिरूढ़ नय है। शब्द भेद होने पर भी अर्थ भेद नहीं है।

एवंभूत – **क्रियाप्रधानत्वेन भूयत इत्येवंभूतः।**

जिस नय में वर्तमान क्रिया की प्रधानता होती है, वह एवंभूत नय है।

प्रमाण	– **1. स्वपरस्वरूपव्यवसायि यत् ज्ञानं तत् प्रमाणं।** जो ज्ञान स्व और परस्वरूप को विशेष रूप से निश्चय करे, वह प्रमाण है। **2. स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्** स्व और अपूर्व अर्थ का निश्चयात्मक ज्ञान प्रमाण है। **3. सकलवस्तु ग्राहकं प्रमाणं।** सकल वस्तु को ग्रहण करने वाला ज्ञान प्रमाण है। **4. प्रमीयते परिच्छिद्यते वस्तुतत्त्वं येन ज्ञानेन तत्प्रमाणम्।** जिस ज्ञान के द्वारा वस्तु स्वरूप जाना जाता है, निश्चय किया जाता है, वह ज्ञान प्रमाण है।
जिन	– **अनेकविषमभवगहनव्ययप्रापण – हेतून् कर्मारातीन् शत्रून् जयन्ति क्षयं नयन्तीति जिनाः।** अनेक विषम भव रूपी गहन संसार में प्राप्ति के हेतु कर्मरूपी शत्रु हैं। इन कर्मरूपी शत्रुओं को जिसने जीत लिया, वह जिन है।
पर्याय	– **परिसमन्तात् आयः पर्यायः।** जो सदैव परिणमन करे वह पर्याय है।
स्वभाव	– **स्वस्य स्वेन वा आत्मनो भवनं स्वभावः।** स्व का होना या स्वयं द्वारा होना स्वभाव है।
जीवद्रव्य	– **चतुर्भिर्प्राणैः जीवति जीविष्यति अजी-वदिति जीवद्रव्यलक्षणं।** चार प्राणों के द्वारा जो जीता है, जीता था और जीवेगा वह जीव द्रव्य का लक्षण है।
ज्ञान	– **ज्ञायते पदार्थ अनेनेति ज्ञानमिति।** जिसके द्वारा पदार्थ जाना जाय वह ज्ञान है।
प्रयोजन	– **जीवद्रव्यस्य बंधमोक्षादिपर्यायैरविनश्वर-रूपेणपरिणमनं प्रयोजनं।**

जीव द्रव्य अविनश्वर रहते हुए भी बंध, मोक्ष आदि पर्याय रूप परिणमन करता है यह जीव का प्रयोजन है।

पारिणामिक भाव – **परिणामे स्वस्यभावे भवः पारिणामिकः।**

अपने स्वभाव से रहना या होना पारिणामिक भाव है।

विभाव – **स्वभावादन्यथाभवनं विभावः।**

स्वभाव से अन्यथा अर्थात विपरीत होने को विभाव कहते है।

दुर्नय – **दुर्दुष्टो नयो दुर्णयः।**

दुर्दुष्ट नय अर्थात दूषित नय दुर्नय है।

संकर – **सर्ववस्तूनां एकवस्तु भवनं संकरः।**

सर्व वस्तुओं का परस्पर मिलकर एक वस्तु हो जाना संकर है।

व्यतिकार – **यस्य वस्तुनः केनापि प्रकारेण स्थितिर्नि भवति स व्यतिकरः।**

जिस वस्तु की किसी भी प्रकार से स्थिति न हो वह व्यतिकर दोष है।

विरोध – **यज्जड़स्य चेतनो भवति चेतनस्य जड़ो भवति स विरोधः।**

जड़ का चेतन हो जाना और चेतन का जड़ होना, जड़ और चेतन में परस्पर विरोध है।

वैयाधिकरण – **अनेक वस्तूनाम् एक वस्तुनि विषमतया स्थितिः तद वैथाधिकरण्यं।**

अनेक वस्तुओं में विषय पर्यायों को एक वस्तु के आधार मानना वैयाधिकरण दोष है।

अनवस्था – **एकस्मात् द्वितीयो, द्वितीयात् तृतीयस्त–स्माच्चतुर्थः तदनवस्थादूषणं।**

एक से दूसरे की, दूसरे से तीसरे की और तीसरे से चौथे की उत्पत्ति इस प्रकार कहीं भी ठहराव नहीं होना अनवस्था दोष है।

संशय – **एक वस्तु विशेष्यक विरुद्धनानाधर्म-प्रकारकज्ञानं हि संशय (स.भं.त.)।**

एक ही वस्तु विषयक, विरूद्ध नाना धर्म विशेषणक युक्त ज्ञान को संशय कहते है।

अप्रतिपत्ति – **अनुपलम्भोऽप्रतिप्रत्तिः।(न्या.दी.)**

अनुपलब्धि को अप्रतिपत्ति कहते हैं।

अभाव – **सर्वथा वस्तुनो नाश एव भवति स अभावो दोषः।**

जिस वस्तु का सर्वथा अभाव है उसका कहना अभाव दोष है।

नय – 1. **प्रमाणेन वस्तुसंगृहीतार्थैकांशो नयः।**

प्रमाण के द्वारा ग्रहण की गई वस्तु के एक अंश को ग्रहण करने वाले ज्ञान को नय कहते हैं।

2. **श्रुतविकल्पो नयः।**

श्रुत ज्ञान के विकल्प को नय कहते हैं।

3. **ज्ञातुरभिप्रायो नयः।**

ज्ञाता के अभिप्राय को नय कहते हैं।

4. **नानास्वभावेभ्यो व्यावृत्य एकस्मिन् स्वभावे वस्तु नयति प्राप्नोतीति नयः।**

जो नाना स्वभावो से हटाकर किसी एक स्वभाव में वस्तु को प्राप्त कराता है वह नय है।

निक्षेप – **प्रमाणनययोर्निक्षेपणं आरोपणं निक्षेपः।**

प्रमाण और नय के द्वारा निक्षेपण-आरोपण करना निक्षेप है।

नाम निक्षेप – **अतद्गुणे वस्तुनि संव्यवहारार्थं पुरुषा-कारान्नियुज्यमानं संज्ञाकर्म नामोच्यते।**

गुणरहित वस्तु में व्यवहार के लिए अपनी इच्छानुसार की गई संज्ञा को नाम निक्षेप कहते है।

स्थापना निक्षेप – **काष्ठपुस्तचित्रकर्माक्षनिक्षेपादिषु सोऽयमिति स्थाप्यमाना स्थापना।**

काष्ठकर्म, पुस्तकर्म, चित्रकर्म और अक्षनिक्षेप आदि में 'यह वह है' इस प्रकार स्थापित करने को स्थापना निक्षेप कहते है।

द्रव्य निक्षेप – **गुणैः द्रोष्यते गुणान् द्रोष्यतीति वा द्रव्यं।**

जो गुणों के द्वारा प्राप्त हुआ था या गुणों को प्राप्त होगा वह द्रव्य निक्षेप है।

भाव निक्षेप – **वर्तमानं तत्पर्यायोपलक्षितं द्रव्यं भावः।**

वर्तमान पर्याय से युक्त द्रव्य भाव निक्षेप है।

निश्चयनय – **अभेदानुपचारितया वस्तुनिश्चीयत इति निश्चयः।**

अभेद और अनुपचारता से जो नय वस्तु का निश्चय करे वह निश्चयनय है।

व्यवहारनय – **भेदोपचारितया वस्तुव्यवह्रियत इति व्यवहारः।**

जो नय भेद और उपचार से वस्तु का व्यवहार करता है वह व्यवहारनय है।

सद्भूत व्यवहारनय – **गुणगुणिनोः संज्ञादिभेदात् भेदकः सद्भूत-व्यवहारः।**

संज्ञादि के भेद से जो नय गुण-गुणी में भेद करता है वह सद्भूत व्यवहार नय है।

असद्भूत व्यवहारनय – **अन्यत्र प्रसिद्धस्य धर्मस्यान्यत्र समारोपण-मसद्भूतव्यवहारः।**

अन्यत्र प्रसिद्ध धर्म (स्वभाव) का अन्यत्र समारोप (निक्षेप) करने वाला असद्भूत व्यवहार नय है।

व्यवहारनय **यः करोति स उपचरितासद्भूतव्यवहारः।**

असद्भूत व्यवहार ही उपचार है, जो नय उपचार से भी उपचार करता है वह उपचरित असद्भूत व्यवहार नय हैं।

उपचारनय – **मुख्याभावे सति प्रयोजने निमित्ते चोपचारः प्रवर्तते।**

मुख्य के अभाव में प्रयोजनवश या निमित्तवश जिसमें प्रवृत्ति की जाये वह उपचार है।

अध्यात्मनयों की विवक्षा

निश्चय-व्यवहारनय – **निश्चयनयोऽभेदविषयो, व्यवहारो भेदविषयः।**

निश्चय नय का विषय अभेद है, व्यवहार नय का विषय भेद है।

शुद्धनिश्चय नय – **निरुपाधिकगुणगुण्यभेद विषयकः शुद्ध-निश्चयो।**

शुद्धनिश्चय नय विकार से रहित गुण और गुणी को अभेद रूप से ग्रहण करता है।

अशुद्धनिश्चय नय – **सोपाधिक विषयोऽशुद्धनिश्चयो।**

जो नय कर्मजनित विकार सहित गुण और गुणी को अभेदरूप से ग्रहण करता है वह अशुद्धनिश्चय नय है।

सोपाधि – **उपाधिना कर्मजनितविकारेण सह वर्तत इति सोपाधिः।**

कर्म जनित विकार की उपाधि के साथ जो जीव है वह सोपाधि कहलाता है।

सद्भूतव्यवहार नय – **एकवस्तुविषयःसद्भूतव्यवहारः।**

एक वस्तु को विषय करने वाला सद्भूत व्यवहार नय है।

असद्भूतव्यवहार नय – **भिन्नवस्तुविषयोऽसद्भूतव्यवहारः।**

		भिन्न वस्तुओं को विषय करने वाला असद्भूत व्यवहार नय है।
उपचरित सद्भूत-व्यवहार नय	-	**1. सोपाधिगुणगुणिनोर्भेदविषयः उपचरितसद्-भूतव्यवहारः।** कर्म जनित विकार सहित गुण और गुणी के भेद को विषय करने वाला उपचरित सद्भूतव्यवहार नय है। **2. अशुद्धगुणगुणिनोः भेदकथनमुपचरित-सद्भूतव्यवहारः।** अशुद्ध द्रव्य में गुण-गुणी का भेद कथन करने वाला नय उपचरित सद्भूतव्यवहार नय है।
अनुपचरित सद्भूत-व्यवहारनय	-	**1. निरुपाधिगुणगुणिनोर्भेद विषयोऽनुप चरित-सद्भूतव्यवहारः।** उपाधि रहित जीव में गुण और गुणी के भेद रूप विषय को ग्रहण करने वाला अनुपचरित सद्भूतव्यवहार नय है। **2. अशुद्धगुणगुणिनोः भेदकथनमुपचरित सद्भूतव्यवहारः।** शुद्ध गुण-गुणी में भेद का कथन करना अनुपचरित सद्भूतव्यवहार नय है।
उपचरित असद्भूत व्यवहार नय	-	**संश्लेषरहितवस्तुसम्बन्धविषय उपचरितासद्-भूतव्यवहारः।** संश्लेष सम्बन्ध रहित भिन्न वस्तुओं का परस्पर में सम्बन्ध ग्रहण करना उपचरित असद्भूतव्यवहार नय है।
अनुपचरित असद् भूतव्यवहारनय	-	**संश्लेषसहितवस्तुसम्बन्धविषयोऽनुपचरिता-सद्भूतव्यवहारः।** संश्लेष सहित वस्तु के सम्बन्ध को विषय करने वाला नय अनुपचरित असद्भूतव्यवहारनय है।

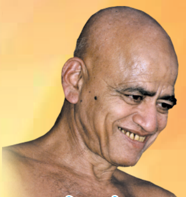

शिक्षा-दीक्षा गुरु
संत शिरोमणि आचार्य श्री 108
विद्यासागरजी महाराज

राजस्थान की राजधानी जयपुर (गुलाबी नगरी) के गौरव
परम पूज्य मुनिश्री 108 संधानसागर जी मुनिराज

जन्म	:	25 सितम्बर 1976 (आश्विन सुदी-2)
जन्म स्थान	:	जयपुर (राजस्थान)
पूर्व नाम	:	बा.ब्र. रोहित भैया जी
पिता	:	श्री अशोक जी जैन (काला)
माता	:	श्रीमती आशा देवी जी जैन
मुनि दीक्षा तिथि	:	31 जुलाई 2015, शुक्रवार, द्वितीय आषाढ़ शुक्ल 15 (गुरुपूर्णिमा)
मुनि दीक्षा स्थान	:	दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बीना बारहा, जिला-सागर (म.प्र.)
दीक्षा गुरु	:	आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज
संकलित कृतियाँ	:	बाल संस्कार सौरभ (1, 2, 3 एवं 4 भाग), आत्म आराधना, पूजा प्रसून, अभिवंदना, माण्डना, शान्तिधारा, हाइकू, प्रमाणिक कहानियाँ, प्रतिभागान, दीपावली पूजन, संस्कृत सूक्तियाँ, सटीक परिभाषायें, भावना भव नाशनी (भाग-1 एवं 2), अव्यय परिचय, आचार्य श्री के चेतन रत्न (चातुर्मास-2016), पद्म पौराणिक कहानियाँ, धारण करें भगवती उदाहरण, हस्तलिखित आ.श्री के प्रवचन (1 से 16 भाग), ये सभी पुस्तकें और ढेर सारी जानकारी के लिए 108guruvani एप्प डाउनलोड करें।
विशेष	:	आपकी सीधी मुनि दीक्षा हुई

सभी साहित्य एवं आचार्य श्री के प्रवचन (14 भाग में) उपलब्ध हैं -

aagamdata.blogspot.in

विश्व प्रसिद्ध अति प्राचीन जैन मंदिर खजुराहो